जुलाई – सितम्बर, 2016 अंकः 82 त्रैमासिक

# वाप्कोस दर्पण

## गृह पत्रिका

# राजभाषा विशेषांक

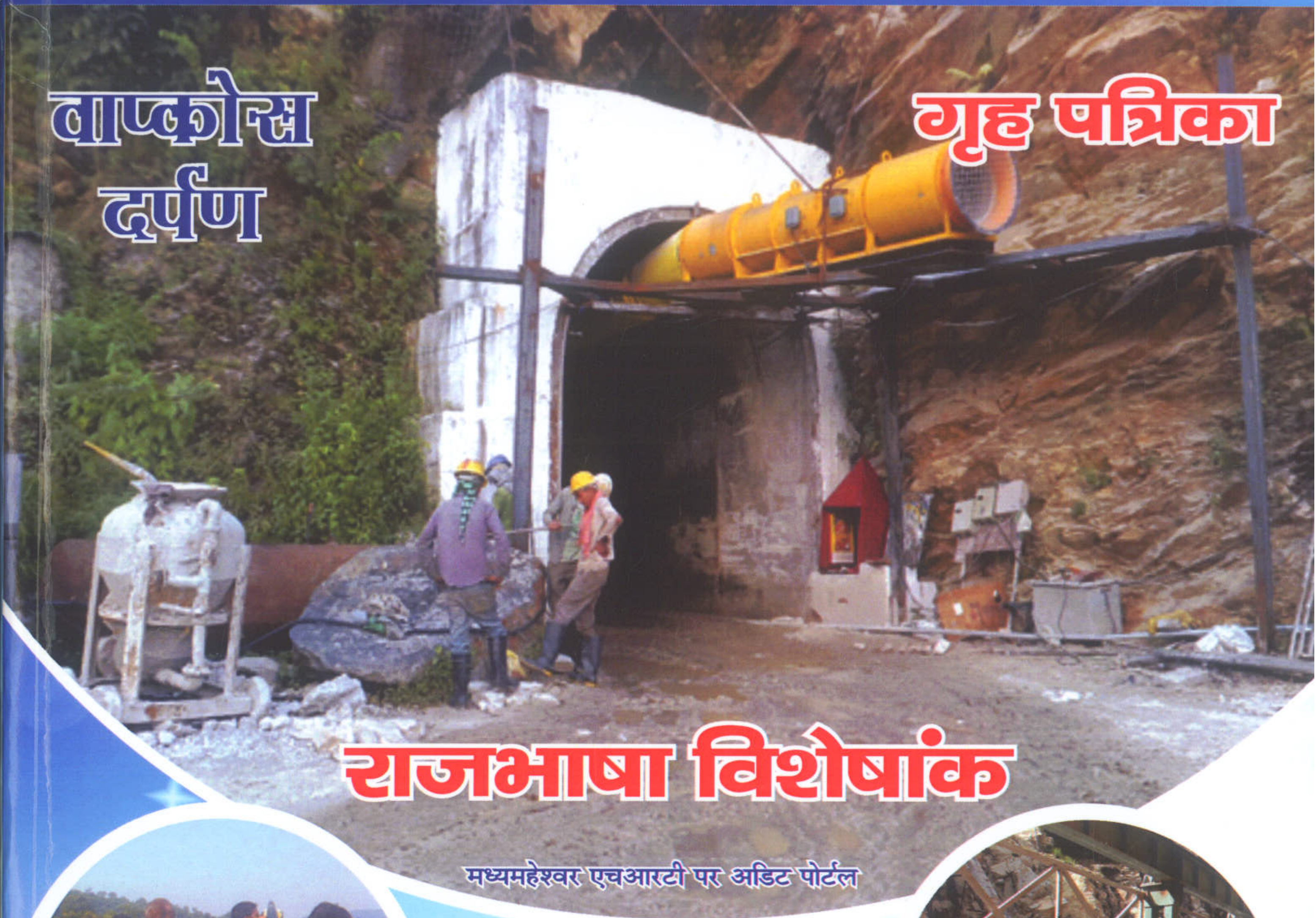

मध्यमहेश्वर एचआरटी पर अडिट पोर्टल

सिम रिप नदी बेसिन पर टोटल स्टेशन के उपयोग द्वारा वाप्कोस टीम स्थलाकृतिक सर्वेक्षण करते हुए

सिम रिप नदी बेसिन पर टोटल स्टेशन के उपयोग द्वारा वाप्कोस टीम नदी सर्वेक्षण करते हुए

हानु पावर हाउस स्थल पर पेनस्टॉक को तीन भाग में बांटना।

### महापुरूषों के कथन

- मेरे लिए हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।
- भाषा मनुष्य के आंतरिक चिंतन एवं समाज के लोगों के भावों और विचारों को अभिव्यक्त करने का सबसे सहज एवं सशक्त माध्यम है।
- भारत की सच्ची आत्मा का ज्ञान हिन्दी द्वारा ही हो सकता है।
- राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है। मेरे विचार में हिन्दी ही ऐसी भाषा है।
- किसी दूसरी भाषा को जानना सम्मान की बात है, लेकिन दूसरी भाषा को अपनी राष्ट्रभाषा के बराबर दर्जा देना शर्म की बात है।

# सन्देश

**'हिन्दी दिवस'** के पावन अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था क्योंकि हिन्दी ही सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा थी ।

हिन्दी का विकास राजभाषा के रूप में निरन्तर तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है । हिन्दी एक सेतु के रूप में काम करते हुए भारत की विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं, कलाओं व सम्प्रदायों को आपस में जोड़ रही है। हमारा देश भाषा के मामले में अत्यंत समृद्ध है । विपुल शब्द-भण्डार से युक्त हिन्दी एक व्यावहारिक, सरल एवं जीवंत भाषा है। अतः हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना हम सबका उत्तरदायित्व है।

हमारे व्यवसाय के क्षेत्र में व्यापार की अत्यंत सम्भावनाएं हैं। व्यवसाय के प्रतियोगी व वैश्वीकरण के वातावरण ने भाषा के महत्व को उजागर कर दिया है। व्यवसाय के क्षेत्र में तीव्र गति से हो रहे परिवर्तन के साथ ही हमें उत्साह, नवीनतम ज्ञान और सकारात्मक गुणों के साथ सतत् रूप से आगे बढ़ना है। वाप्कोस के विभिन्न तकनीकी प्रभागों द्वारा अपने कार्य में हिन्दी का अधिकतम प्रयोग इस क्षेत्र में एक अमूल्य योगदान है। राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए आज हर क्षेत्र में सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध हैं जिनका प्रयोग करके हम राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग दे सकते हैं ।

इस महत्वपूर्ण दिवस की गरिमा को बनाए रखने के लिए वाप्कोस लिमिटेड में 01.09.2016 से 15.09.2016 तक उत्साह के साथ **''हिन्दी पखवाड़ा''** आयोजित किया जा रहा है। इस दौरान कार्यालय में हिन्दी में विभिन्न प्रतियोगिताएं व कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। आशा है कि आप इन प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों में उत्साह से भाग लेंगे ।

आइए, इस अवसर पर हम सब अपने कामकाज में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति अपनी निष्ठा व समर्पण की भावना का परिचय दें ।

जय हिन्द !

दिनांक : 01 सितम्बर, 2016

आर. के. गुप्ता

**(आर.के.गुप्ता)**
**अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक**
**वाप्कोस लिमिटेड**

वाप्कोस
WAPCOS

# वाप्कोस दर्पण

जुलाई-सितम्बर, 2016 अंक-82

**संरक्षक**
आर.के.गुप्ता
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

**तकनीकी संपादन सलाहकार**
अमिताभ त्रिपाठी, मुख्य अभियंता

**संपादन मण्डल**
डा.आर.पी.दूबे, वरि.महा प्रबंधक
एस.विजयराव, कार्यकारी निदेशक
अमिताभ त्रिपाठी, मुख्य अभियंता

**संपादक**
निम्मी भट्ट,
उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)

**उप संपादक**
डी.के.सेठी
उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

**सहयोग**
गीता शर्मा, सहायक प्रबंधक
शारदा रानी, वरि.सहायक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

**केवल आन्तरिक वितरण हेतु**

| इस अंक में | पृष्ठ सं0 |
|---|---|
| संदेश – राजनाथ सिंह, गृहमंत्री, भारत | 1 |
| संदेश – सुश्री उमा भारती, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री | 3 |
| संदेश – डा0 संजीव कुमार बालियान, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण राज्य मंत्री | 4 |
| संदेश – श्री विजय गोयल, राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) युवा कार्यक्रम और खेल एवं जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण राज्य मंत्री | 5 |
| संबोधन – कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास | 6 |
| दो शब्द – वरि. महा प्रबंधक (पत्तन एवं बंदरगाह) | 7 |
| दो शब्द – वरि.महा प्रबंधक (का./प्रशा. व वि.) | 8 |
| दो शब्द – मुख्य अभियंता (बांध व जलाशय) | 9 |
| सम्पादकीय – उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.) एवं संपादक | 10 |
| नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव की बैठक | 11 |
| राजभाषा गतिविधियां | 12 |
| राजभाषा हिन्दी की चुनौतियां | 18 |
| वृक्ष संरक्षण | 21 |
| हिन्दी पखवाड़े के दौरान विविध क्षेत्रीय/फील्ड कार्यालयों में आयोजित कार्यक्रम | 23 |
| लेख - मेरा नीम | 27 |
| लेख - महिला सशक्तिकरण | 29 |
| लेख - दान की महत्ता (श्राद्ध कर्म) | 31 |
| लेख - क्या आपने सलमा बांध देखा है? | 37 |
| कविता – मैं कश्मीर हूं | 42 |
| हार्ट अटैक के लक्षण | 44 |
| बदलाव की सबसे ज्यादा शक्ति प्रेम में ही होती है | 47 |
| अकबर-बीरबल और ऊंट की गर्दन | 49 |
| आपके पत्र | 50 |

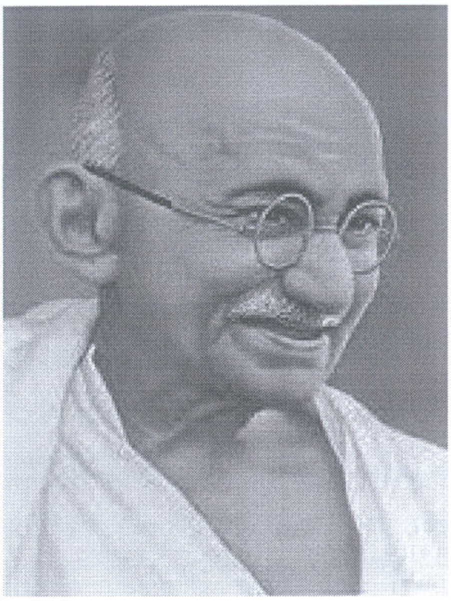

अवतार का अर्थ है – शरीरधारी विशिष्ट पुरूष। जीवमात्र ईश्वर के अवतार हैं, परन्तु लौकिक भाषा में हम सबको अवतार नहीं कहते। जो पुरुष अपने युग में सबसे श्रेष्ठ धर्मवान पुरुष होता है, उसे भविष्य की प्रजा अवतार के रूप में पूजती है। इसमें मुझे कोई दोष नहीं मालूम होता। इससे न तो ईश्वर की महत्ता को लांछन लगता है, और न ही इससे सत्य को ही आघात पहुंचता है।

- सम्पूर्ण गांधी वाड्मय (खण्ड 41), पृ0 94

सत्यमेव जयते

# राजनाथ सिंह
## RAJNATH SINGH
## गृह मंत्री, भारत
### HOME MINISTER, INDIA

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सब को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं !

भाषा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर की संवाहक होती है और साथ ही संपूर्ण राष्ट्र की एकता और अखंडता की एक महत्वपूर्ण कड़ी भी होती है । इस संबंध में भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने हिंदी भाषा के बारे में अपना उद्‌गार व्यक्त किया था कि "हिंदी को राष्ट्र भाषा घोषित करने में एक दिन भी खोना देश को भारी सांस्कृतिक नुकसान पहुंचाना है । स्व-भाषा के बिना स्वराज का बोध नहीं हो सकता।" राष्ट्रीयता, भारतीयता और एकता हिंदी का मूल स्वर है और राजभाषा हिंदी सरकार एवं संपूर्ण देश की आम जनता के बीच में संवाद की भाषा होकर अपनी सार्थक भूमिका निभा रही है । इस प्रकार हिंदी को राष्ट्रीय स्वाभिमान का अंग एवं प्रेरणा स्रोत के रूप में सर्वाधिक उपयुक्त समझते हुए भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। इसी अनुक्रम में 26 जनवरी, 1950 में लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार यह व्यवस्था की गई कि संघ सरकार की राजभाषा हिंदी होगी एवं इसकी लिपि देवनागरी होगी।

विश्व में भारत भूमि में सर्वप्रथम सभ्यता एवं संस्कृति का उद्‌गम हुआ। जिस भारत भूमि में सांख्य दर्शन, योग, दशमलव प्रणाली, ज्योतिष विज्ञान, ग्रह-नक्षत्रों की दूरी, काल की गणना जैसे ज्ञान से परिपूर्ण विषयों पर उत्कृष्ट साहित्य का सृजन हुआ हो, उस देश की भाषाओं का अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी जड़ें कितनी गहरी, समुन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिकतापूर्ण हो सकती हैं । भारतीय भाषाओं की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ सरकार को यह दायित्व सौंपा गया कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके ।

आज की उदारीकृत अर्थव्यवस्था के युग में देश को अशिक्षा, बेरोजगारी और गरीबी से उबारने के लिए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यावरण संरक्षण, कृषि, अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे अनेक क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षित करने की नितांत आवश्यकता है । लेखक और प्रकाशक राजभाषा हिंदी के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को सभी भारतीयों तक पहुंचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं ।

भारत सरकार के सभी कार्यालयों में सरकारी कामकाज में सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग किया जाए ताकि यह सभी के लिए बोधगम्य हो तथा इसका प्रयोग बहु-आयामी हो सके । यह याद रखना आवश्यक है कि संघ की राजभाषा नीति का मुख्य उद्देश्य राजकीय कार्य मूल रूप से हिंदी में करना है । मूल रूप से कार्यालयीन कार्य हिंदी में किए जाने से ही राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा तथा राजभाषा नीति का सही मायनों में कार्यान्वयन संभव होगा । इस दिशा में अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए दो महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने आवश्यक हैं । पहला, मैं विशेष रूप से केंद्र सरकार में कार्यरत सभी वरिष्ठ अधिकारियों से आग्रह करता हूं कि वे स्वयं अपना रोज़मर्रा का सरकारी कामकाज हिंदी में करें ताकि अन्य सभी कार्मिकों को भी ऐसा करने की प्रेरणा मिले। दूसरा, सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए मैं केंद्र सरकार के सभी प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों से अनुरोध करता हूं कि वे राजभाषा विभाग द्वारा 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों के लिए निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन हिंदी माध्यम में करें । इस प्रयोजनार्थ व्यावहारिक कार्य-योजना बनाकर गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है ।

मैं यह अपील करता हूं कि राजभाषा विभाग को भेजी जाने वाली हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्टों व अन्य अपेक्षित रिपोर्टों में वास्तविक और तथ्यपरक आंकड़े एवं सूचनाएं ही दी जाएं। संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है, किंतु संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी प्रकार दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है ।

आइए ! हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम यह दृढ़ संकल्प लें कि हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य पूर्ण उत्साह, लगन और गर्व के साथ राजभाषा हिंदी में करेंगे । मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक, सार्थक एवं अथक प्रयासों से हम अपना लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त करेंगे और देश में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को नए आयाम देंगे ।

जय हिंद !

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2016

(राजनाथ सिंह)

उमा भारती
UMA BHARTI

सत्यमेव जयते

जल संसाधन, नदी विकास
एवं गंगा संरक्षण मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF WATER RESOURCES
RIVER DEVELOPMENT AND
GANGA REJUVENATION
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110001

## संदेश

29 AUG 2016

मेरे प्रिय साथियों,

"हिंदी दिवस" के शुभ अवसर पर मैं आप सभी को अपनी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देती हूं।

हमें भारतीय संविधान द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने और उसके प्रचार-प्रसार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। हमारा देश विविध बोलियों एवं भाषाओं की संगमी स्थली है। भाषा न केवल संस्कृति का अभिन्न अंग है, बल्कि कुंजी भी है। देश में सांस्कृतिक समन्वय के जो प्रयास हो रहे हैं उसमें हिंदी भाषा का विशेष योगदान है। हिंदी अपनी आंतरिक ऊर्जा, अपनी सरलता, सहजता, बोध गम्यता और समन्वय की भावना से निरन्तर आगे बढ़ते हुए पूरे देश से संपर्कसूत्र बन गई है।

इस बदलते युग में, सरकारी कार्यालयों में काम करने की प्रक्रिया व ढंग बदल रहा है। आज अधिकांश कार्य कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा हो रहे हैं। अतः कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बनाए रखने और बढ़ावा देने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न कम्प्यूटर सिस्टमों और सॉफ्टवेयरों में हिंदी में कार्य करने की पूर्ण सुविधा हो, नही तो बढ़ते हुए कम्प्यूटरीकरण में हिंदी की प्रगति में रुकावट पहुंचेगी।

राजभाषा के रुप में हिंदी स्वीकारने का मुख्य उद्देश्य है कि जनता का काम जनता की भाषा में सम्पन्न हो, उसमें कठिन भाषा शैली के लिए कोई स्थान नहीं होता। सरकारी कामकाज में हिंदी की प्रगति एवं प्रचार-प्रसार के लिए आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। कार्यालय की भाषा में कठिन शब्दों का प्रयोग करके उसे बोझिल न बनाए।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय में उत्साह के साथ 'हिंदी पखवाड़ा' समारोह आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर हम संकल्प लें कि हम अपने कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति निष्ठा और समर्पण भावना का परिचय देंगे ।

हार्दिक शुभकामनाएं ।

'हिंदी देश की शान है हिंदी है पहचान,
हिंदी में सब काम करें, हिंदी है आसान

(उमा भारती)

Room No. 210, Shram Shakti Bhawan, New Delhi-110 001
Tel. : (011) 23711780, 23714663, 23714200,Fax : (011)23710804
E-mail : minister-mowr@nic.in

जल क्रांति अभियान

डॉ० संजीव कुमार बालियान
DR. SANJEEV KUMAR BALYAN

सत्यमेव जयते

जल संसाधन, नदी विकास
एवं गंगा संरक्षण राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF STATE FOR WATER RESOURCES
RIVER DEVELOPMENT AND
GANGA REJUVENATION
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110001

## संदेश

प्रिय साथियो,

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

भारत के संविधान के अनुसार, संघ की राजभाषा हिंदी है । इसलिए हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम अधिकाधिक कार्य हिंदी में करें । राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए हमें राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए । वास्तव में हिंदी में काम करने के लिए यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण होगा कि भाषा को सहज एवं सरल रूप से लिखा जाए ।

सरकारी कामकाज में पिछले कई वर्षों से हिंदी का निरंतर विकास हुआ है और कार्यालयों में हिंदी को सुगम बनाने के लिए अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं । सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तेजी से प्रगति हो रही है । हिंदी भाषा का प्रयोग करने वालों तक इसका पूरा लाभ पहुंचाने के लिए यह आवश्यक है कि कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग के लिए यूनिकोड का प्रयोग किया जाए । साथ ही यह भी जरूरी है कि हम कंप्यूटरों पर उपलब्ध आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिंदी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें ।

मुझे उम्मीद है कि जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के अधिक से अधिकारी और कर्मचारी 'हिंदी पखवाड़ा' समारोह के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे ।

'हिंदी पखवाड़े' के इस शुभ अवसर पर मैं आप सभी को बधाई देते हुए "हिंदी पखवाड़े" की सफलता की कामना करता हूं ।

(डॉ. संजीव कुमार बालियान)

215, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली -110 001
दूरभाष : (011) 23708419, 23718759, फैक्स : 011-23354496
215, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
Tel. : (011) 23708419, 23718759, Fax : 011-23354496
E-mail : mos-mowr@nic.in

विजय गोयल
Vijay Goel

सत्यमेव जयते

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
युवा कार्यक्रम और खेल
राज्य मंत्री
जल संसाधन, नदी विकास और
गंगा संरक्षण, भारत सरकार
MINISTER OF STATE (INDEPENDENT CHARGE)
YOUTH AFFAIRS AND SPORTS
MINISTER OF STATE FOR
WATER RESOURCES, RIVER DEVELOPMENT
& GANGA REJUVENATION
GOVERNMENT OF INDIA

प्रिय साथियों,

## सन्देश

हिन्दी दिवस के इस शुभ अवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं।

गणतंत्र भारत में राजभाषा हिन्दी का सफर निरन्तर प्रगति के पथ पर बढ़ रहा है। इन बीते वर्षों में हिन्दी ने न केवल राजभाषा के रूप में भी अपनी पहचान बनाई है, बल्कि सामाजिक दायित्व को निभाते हुए जनमानस की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनी हुई है। यह प्रसन्नता का विषय है कि आज देश में लगभग हर जगह हिन्दी सम्पर्क सूत्र का माध्यम बनने में और सक्षम हो रही है।

आज हमारा देश आर्थिक रूप से महाशक्ति बनने के पथ पर अग्रसर है। ऐसे में दुनिया के सभी लोग हिन्दी को सीखना चाहेंगे, ताकि उन्हें भारत में व्यापार करने में आसानी हो सके। जो देश अपनी भाषा को अपनाता है, वह अपने आपको तो महान एवं शक्तिशाली बनाता ही है, साथ ही उस देश के जनमानस को भी आत्मविश्वासी बनाता है।

सूचना क्रांति के इस युग में अपने विकास को कायम रखने के लिए हिन्दी को भी नई तकनीकों से लैस करना होगा और आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाना होगा।

मुझे विश्वास है कि सभी अधिकारी और कर्मचारी अपने कामकाज में सहज–सरल हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति निष्ठा और समर्पण का पूर्ण परिचय देंगे। हिन्दी में काम करने की भावना केवल 'हिन्दी पखवाड़े' तक ही समिति नहीं रहनी चाहिए, बल्कि लगातार जीवन में हिन्दी में कार्य करना चाहिए।

जय हिन्द !

(विजय गोयल)

401, 'सी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110 001, फोन : 91-11-2338 1185, 2338 6520, फैक्स : 91-11-2338 1898
401, 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110 001, Telephone : 91-11-2338 1185, 2338 6520, Fax : 91-11-2338 1898
वेबसाईट/Website : http://www.yas.nic.in

# संबोधन

'14 सितम्बर – हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी मंगल कामनाएं।

हिन्दी हमारे देश की सबसे बड़ी सम्पर्क भाषा है और देश के अधिकांश लोगों द्वारा आपसी व्यवहार में प्रयुक्त की जाती है। भाषा विचारों के आदान-प्रदान का एक महत्वपूर्ण सशक्त माध्यम है । हिन्दी के इसी महत्व को देखते हुए इसे संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया।

वाप्कोस एक तकनीकी संगठन है। इसके तकनीकी प्रभागों द्वारा कार्यालय के अपने कामकाज में हिन्दी का प्रयोग हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एक अमूल्य योगदान है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिन्दी का प्रयोग व्यापक रूप से विकसित हो रहा है। गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का यूनिकोड समर्थित हिन्दी साफ्टवेयर इंडिक आईएमई आज अत्याधिक प्रचलित है जिसकी सहायता से हिन्दी में बड़ी आसानी से कार्य किया जा सकता है। यह साफ्टवेयर वाप्कोस के सभी कम्प्यूटरों पर अपलोड किया गया है जिसकी मदद से हम हिन्दी में आसानी से कार्य कर सकते हैं।

हमें महत्वपूर्ण जानकारी व ज्ञान उपलब्ध कराने के लिए वेबसाइटों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः हमारा भी यह उत्तरदायित्व बनता है कि हम आधुनिक उपकरणों के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें।

इस अवसर पर हम सब हिन्दी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों को समझते हुए संकल्प लें कि अपना कार्यालय का कार्य यथासंभव हिन्दी में करते हुए राजभाषा के विकास में अपना सहयोग करेंगे। इसी के साथ हिन्दी पखवाड़े के सुअवसर पर मैं आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं अर्पित करता हूं।

अनुपम मिश्रा

**(अनुपम मिश्रा)**

**कार्यकारी निदेशक (परि. व मा.सं. वि.) एवं**

**अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति**

# दो शब्द

भारत एक बहुआयामी देश है और हिन्दी हम सबको एकता के सूत्र में पिरोए हुए है। हिन्दी विश्व की कुछ प्रमुख भाषाओं में से एक है। इसलिए भारत को समझने-जानने वालों के अलावा व्यापार और वाणिज्य क्षेत्र के लोग भी हिन्दी सीख रहे हैं। आज के इस प्रगतिशील दौर में हमारे लिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हम हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाएं। कार्यालय के अपने दैनिक कार्यों में हिन्दी का अधिकतम प्रयोग करके हमें इस क्षेत्र में प्रगति करनी है।

हम कार्यालय का अपना कामकाज सरल हिन्दी में ही करें । हमें अपने प्रतिदिन के कार्यों में नित नए अवसर प्राप्त होते हैं तो कुछ चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। बस ऐसे ही कोई अवसर मिले तो हिन्दी को भी उसमें थोड़ा स्थान दे दें । यह आप पर निर्भर करता है कि कब और कैसे करना है । हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसमें हम अपने पूर्ण विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकते हैं और अपनी भाषा में दूसरे व्यक्ति को भली-भांति समझा भी सकते हैं । आज हम प्रण करें कि हम कार्यालय का अपना अधिकतम कार्य यथासंभव अपनी राजभाषा हिन्दी में ही करेंगे ।

हिन्दी दिवस की शुभकामनाओं के साथ,

(डा० आर.पी. दूबे)
वरि. महा प्रबंधक (पत्तन एवं बंदरगाह)
एवं सदस्य, संपादन मण्डल
'वाप्कोस दर्पण'

# दो शब्द

भारत जैसे विविधता वाले देश की राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का सबसे शक्तिशाली एवं प्रभावी माध्यम 'हिन्दी' है, क्योंकि यह पूरे देश में बोली व समझी जाने वाली भाषा है ।

हमें कार्यालय के अपने कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को निरंतर आगे बढ़ाना है। आम जनता को सूचना-प्रौद्योगिकी, पर्यावरण संरक्षण, कृषि, इंजीनियरी व स्वास्थ्य सेवाओं जैसे अनेक क्षेत्रों में राजभाषा हिन्दी के माध्यम से शिक्षित करने की अत्यंत आवश्यकता है। लेखक व प्रकाशक आधुनिक ज्ञान को सभी भारतीयों तक पहुंचाने में अपना योगदान दे सकते हैं ।

हिन्दी में काम करना आसान है । आवश्यकता है केवल एक प्रयास की, अपनी अंग्रेजी में काम करने की मानसिकता को छोड़कर निसंकोच हिन्दी में काम करने की एक शुरूआत की । फिर, वह दिन दूर नहीं जब हम अपना सारा कार्य अपनी मातृभाषा हिन्दी में करने लगेंगे ।

आइये, हम आज हिन्दी दिवस के अवसर पर संकल्प लें कि कार्यालय का अपना सारा कार्य राजभाषा हिन्दी में करेंगे ।

हिन्दी दिवस की शुभकामनाओं के साथ,

(एस.विजयराव)<br>
कार्यकारी निदेशक (का./प्र. व वि.)<br>
एवं सदस्य, संपादन मण्डल<br>
'वाप्कोस दर्पण'

# दो शब्द

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर आपको मेरी शुभकामनाएं ।

भारत विविध भाषाओं और संस्कृतियों का देश है और हिन्दी ने न केवल हमारी राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखा है बल्कि उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभाई है। प्रत्येक व्यक्ति में असीम प्रतिभाएं मौजूद हैं, परन्तु लेखन एक ऐसी प्रतिभा है जो यदि जनभाषा में हो तो वह व्यक्ति की प्रतिभा को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रकट करने या दूसरे व्यक्ति को समझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः हिन्दी जो हमारे देश के लगभग पूरे भू-भाग में कम या ज्यादा बोली जाती है, एक ऐसी भाषा है जिसके माध्यम से अपनी बात किसी को भी बड़ी सरलता से समझाई जा सकती है ।

हमें कार्यालय के दैनिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाकर इस क्षेत्र में प्रगति को जारी रखना है। कार्यालय में प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ तकनीकी कार्यों में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना है। आज हर क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है जिसके कारण हर क्षेत्र के लोग हिन्दी सीख भी रहे हैं ।

इस अवसर पर हम सब कार्यालय के कार्य और व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें ।

जय हिन्द ! जय हिन्दी !

**(अमिताभ त्रिपाठी)**
**मुख्य अभियंता (बांध एवं जलाशय)**
**एवं तकनीकी संपादक/सदस्य,**
**संपादन मण्डल 'वाप्कोस दर्पण'**

# सम्पादकीय

भारत एक लोकतांत्रिक देश है और किसी भी लोकतांत्रिक देश की सफलता के लिए यह जरूरी है कि उसका कामकाज उसकी राजभाषा में हो ।

जैसाकि आप सब जानते हैं कि वाप्कोस में दिनांक 01 सितम्बर से 15 सितम्बर, 2016 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान राजभाषा नीतिज्ञान प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता तथा समूह 'घ' के कर्मचारियों के लिए हिन्दी श्रुतलेख प्रतियोगिता के साथ-साथ तकनीकी वर्ग के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए हिन्दी में तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय/फील्ड कार्यालयों द्वारा भी **'हिन्दी दिवस'** व **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। लेकिन अगर हम वास्तविकता को पहचाने तो क्या यह ठीक हो रहा है? क्या हमारी यह नैतिक व स्वैच्छिक जिम्मेदारी नहीं है कि हम अपना कार्यालय का समस्त कार्य हिन्दी में ही करें तथा दूसरों को भी ऐसा करने की प्रेरणा दें । हमें गर्व होना चाहिए कि हम भारतीय हैं और हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है।

अपने कार्यालय के कामकाज में सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग करें । हिन्दी को बढ़ाने के लिए हमें हमेशा अग्रसर रहना है। हमें बस दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। अपने कार्यालय के अधिकतम कार्य हिन्दी में करके अपने दायित्वों को पूरा करने में सक्षम बने और राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में नए कीर्तिमान बनाएं। मेरा आप सभी से अनुरोध है कि हमारा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति प्रयास केवल हिन्दी पखवाड़े तक ही सीमित न रहे अपितु प्रत्येक दिन 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाए ।

'हिन्दी दिवस' के शुभ अवसर पर शुभकामनाओं के साथ,

**(निम्मी भट्ट)**
**उप मुख्य प्रबंधक (रा.भा.का.)**
**एवं संपादक**

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), गुड़गांव की बैठक

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नराकास, गुड़गांव की अध्यक्षता में दिनांक 04.08.2016 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), गुड़गांव की बैठक वाप्कोस लिमिटेड के गुड़गांव कार्यालय में सम्पन्न हुई इसमें लगभग सभी सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों/प्रतिनिधियों व राजभाषा अधिकारियों ने भाग लिया। इस बैठक में श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि. व मा.सं.वि.) व अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भी उपस्थित थे ।

********

# राजभाषा गतिविधियां

## हिन्दी पखवाड़ा

- हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर वाप्कोस के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक की ओर से एक ''सन्देश'' जारी किया गया।

- कार्यालय के कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए वाप्कोस में अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक श्री आर.के.गुप्ता के निर्देशन व मार्गदर्शन में 01.09.2016 से 15.09.2016 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। कम्पनी के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया गया कि वे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें ताकि भविष्य में अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके तथा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए अनुकूल वातावरण बनाया जा सके। इस दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं/योजनाएं आयोजित की गईः-

- हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता
- चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता
- राजभाषा नीति ज्ञान प्रतियोगिता
- श्रुतलेख प्रतियोगिता (केवल समूह ''घ'' कर्मचारियों के लिए)
- विशेष अल्पकालिक राजभाषा नकद पुरस्कार योजना (टिप्पण/लेखन)
- हिन्दी आशुलिपि/हिन्दी टंकण में कार्य करने की विशेष अल्पकालिक नकद पुरस्कार योजना।

  उक्त प्रतियोगिताओं में काफी कार्मिकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन अवसरों पर जल संसाधन, नदी विकास व गंगा संरक्षण मंत्रालय से भी अधिकारियों को मार्गदर्शन के लिए बुलाया गया।

- वाप्कोस में ''हिन्दी पखवाड़ा'' मनाये जाने की एक प्रेस रिलीज विभिन्न दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई।

- दिनांक 9.9.2016 को अभियन्ताओं/तकनीकी अधिकारियों के लिए हिन्दी में **''बांधों से विकास और समृद्धि''** नामक तकनीकी विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा की गई। यह संगोष्ठी पूर्णतः हिन्दी में की गई जिसमें सभी वक्ताओं ने अपने विचार हिन्दी में ही व्यक्त किये।

- दिनांक 15.9.2016 को हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1 (दिल्ली) से श्री पी.के.शर्मा, उप निदेशक (कार्यान्वयन) भी उपस्थित थे जिन्होंने राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति तथा राजभाषा नियम/अधिनियम के बारे मे जानकारी दी। इस कार्यशाला में 16 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

- दिनांक 9.9.2016 को श्री अनुपम मिश्रा, कार्यकारी निदेशक (परि.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष विराकास की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई।

- जल संसाधन मंत्रालय की दिनांक 29.9.2016 को आर्थिक सलाहकार एवं राजभाषा प्रभारी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्रीमती निम्मी भट्ट, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.) ने भाग लिया।

- राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग संबंधी स्थिति का जायजा लेने हेतु श्री डी.के.सेठी, उप प्रबन्धक, (रा.भा.) द्वारा दिनांक 23.9.2016 को वाप्कोस के गुड़गांव स्थित पत्तन एवं बन्दरगाह प्रभाग का राजभाषाई निरीक्षण किया गया।

- नराकास, गुड़गांव, की नवगठित समिति की दूसरी बैठक श्री आर.के.गुप्ता, अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक, वाप्कोस एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुड़गांव की अध्यक्षता में दिनांक 04.08.2016 को आयोजित की गई।

- जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की दिनांक 19.7.2016 को माननीया जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्री जी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में वाप्कोस से श्री अमर कुमार, मुख्य कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यानवयन समिति तथा श्रीमती निम्मी भट्ट, उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.) ने भाग लिया।

**(डी.के.सेठी)**
**उप प्रबन्धक (रा.भा.)**

********

# हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

# हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

# हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

# हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की झलकियां

# राजभाषा हिन्दी की चुनौतियां

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध)

पंकज कुमार दूबे
अभियंता, बी.डी. प्रभाग

**प्रस्तावना** : भाषा एक माध्यम है, विचारों के आदान-प्रदान का। राजभाषा वह भाषा होती है जिसमें किसी देश के अधिकांश कार्य सम्पादित होते हैं । सौभाग्य से हमारी राजभाषा हिन्दी है, जिसे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राजभाषा का दर्जा दिया गया। हिन्दी बड़ी ही सरल एवं सरस भाषा है, जिसका किसी दूसरी भाषा से बैर नहीं है। जिस प्रकार भारतीय संस्कृति अनादिकाल से सभी संस्कृतियों के सदगुणों को अपने में समाहित करती है, वही कार्य हिन्दी भाषा का है। हिन्दी दिमाग की नहीं दिल की भाषा है। इसमें भाव, स्नेह और सकून होता है। पाठक के मन में आनंद की अनुभूति प्रदान करती है, हृदय गदगद हो जाता है उच्च कोटि का हिन्दी साहित्य पढ़कर। भाषा और साहित्य समाज के दर्पण होते हैं ।

## राजभाषा हिन्दी की चुनौतियां

**अतीत में हिन्दी की चुनौतियां** :- हिन्दी भाषा की आत्मकथा काफी सुहानी नहीं रही है। चुनौतियों का सामना ये हमेशा से करती रही है। जब स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को राजभाषा घोषित किया गया, तो कुछ आंशिक विरोध और वर्तमान परिस्थितियों को देखकर यह प्रबंध किया गया कि अगले 15 वर्षों तक सरकार अंग्रेजी माध्यम में भी अपना कार्य सम्पादित करेगी। इसे दृढ़ इच्छा की कमी कहें या जो भी, लेकिन इस वाक्य ने राजभाषा के विकास में रूकावट अवश्य डाली। उदाहरण के तौर पर टर्की की आजादी के बाद वहां की राजभाषा बदलने का आदेश 24 घंटे के अन्दर दिया गया था। निसन्देह यह सम्भव नहीं था लेकिन उनका उद्देश्य स्पष्ट था। तात्पर्य यह की भाषा के विकास के लिए समर्पण और इच्छाशक्ति जरूरी है जो शुरूआत के दिनों में हिन्दी को नहीं मिल पायी। संयुक्त राष्ट्र की 6 भाषाओं में कोई ऐसी भाषा नहीं है जिसके बोलने वालों की संख्या हिन्दी भाषा से ज्यादा हो । 9 करोड़ लोग फ्रेंच बोलते हैं, वो भाषा संयुक्त राष्ट्र के पटल पर गर्व से खड़ी है, परन्तु एक अरब लोग हिन्दी भाषा को बोलते हैं फिर भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसका मान उतना नहीं है जितना होना चाहिए।

स्वतंत्रता संग्राम के समय गांधी जी द्वारा चलाए जाने वाले कार्यक्रमों में चरखा काटने के अलावा हिन्दी सीखना और सिखाना भी एक अभिन्न अंग था। यह आम जन की भाषा थी।

राजभाषा की चुनौतियों का वर्गीकरण बहुत मुश्किल है लेकिन कुछ ऐसे कारक हैं जिनके कारण राजभाषा का विकास बाधित हुआ है। उन्हें निम्नलिखित भागों से समझा जा सकता है :-

1. **वर्तमान समय में अंग्रेजी को बुद्धिमता का स्तर मानना** : हमारी स्वतंत्रता शारीरिक है, मानसिक नहीं। पराधीनता से मुक्त हुये हमें अरसा हो आया, लेकिन हम आज भी मानसिक गुलामी की जंजीरों में जकड़े हैं । किसी महापुरूष ने कहा है कि अगर किसी देश पर विजय प्राप्त करनी है तो शारीरिक नहीं मानसिक विजय प्राप्त करो। समाज की जड़ वहां की संस्कृति होती है, उसे नष्ट करो। कुछ ऐसा ही काम मैकाले ने किया। आज हम अपने आसपास इस चीज को महसूस कर सकते हैं कि कितने सारे लोग अपनी मातृभाषा का प्रयोग करने में असहज होते हैं। अंग्रेजी के ज्ञान को बुद्धिमत्ता का स्तर माना जाता है। लोगों की मानसिकता पश्चिमीकरण से ढल रही है। आज अंग्रेजी माध्यम के स्कूल धड़ल्ले से खुल रहे हैं । बच्चों को बचपन से ही सिर्फ अंग्रेजी बोलने की शिक्षा दी जा रही है। यह राजभाषा के विकास में सबसे बड़ी चुनौती है।

2. **भूमण्डलीकरण/वैश्वीकरण** : आज की जीवनचर्या रीयल टाइम हो गई है। आप विश्व में कहीं भी रहें, एक दूसरे से जुड़े हैं। शिक्षा, व्यापार, तकनीकी हर एक क्षेत्र में पूरा विश्व जुड़ा हुआ है। ऐसे में विचारों के आदान प्रदान का माध्यम अंग्रेजी होना अनिवार्य है। सारे कार्य अंग्रेजी भाषा में ही निष्पादित होते हैं। रोजगार का माध्यम अंग्रेजी हो गया है। युवा रोजगार की तरफ आकर्षित होता है तो सफर अंग्रेजी द्वारा तय करना है। विश्व एक बाजार हो गया है और सर्वाधिक कार्य योग्य मानव संसाधन भारत के पास हैं जोकि अध्ययन का वो माध्यम अपनाना चाह रहा है जो उसे रोजगार दिलाए ।

3. **राजभाषा के विकास में लगे हुए लोगों में दृढ़-इच्छाशक्ति की कमी** : विकास समर्पण के फलस्वरूप होता है हिन्दी भाषा के विकास के लिए समितियां बनती हैं, कार्यक्रम होते हैं लेकिन फिर भी जमीन पर कुछ खास विकास नजर नहीं आता। विकास में लगे हुए लोगों को जनता की जरूरतों को समझना होगा। जमीनी स्तर पर कार्यक्रमों का क्रिन्यान्वयन न होने से कुछ नहीं होगा। रचनाकारों को आम जन की जरूरतों की टोह लेनी पड़ेगी, रचना उसके अनुसार लिखनी पड़ेगी। अभिज्ञान-शकुन्तलम् एक कालजयी रचना है, लेकिन वर्तमान समय का हिन्दी पाठक उसे उतने आनंद से नहीं पढ़ता जितना कि चेतन भगत के अंग्रेजी

उपन्यास का अनुवाद पढ़ता है। कारण ये है कि जो उसे अपने जीवन के निकट लगता है जो उसे ज्यादा आनंद देता है, पाठक वह हिन्दी पढना चाहता है।

4. तकनीकी एवं विज्ञान के विकास ने भी अंग्रेजी को बढ़ावा दिया है। ये विषय अंग्रेजी भाषा में ज्यादा रूचिकर और आसान होते हैं।

5. राजभाषा से लगाव की कमी भी एक चुनौती है । हम चीन, जापान आदि देशों में देख सकते हैं कि वहां गर्व से लोग अपनी मातृभाषा का इस्तेमाल करते हैं ।
6. राजभाषा हिन्दी की शिक्षा व्यवस्था का जीर्ण स्तर ।

उपसंहार : चुनौतियां विकास का मार्ग प्रशस्त करती हैं जहां चुनौती नहीं, वहां विकास क्या होगा। हिन्दी भाषा एक सारगर्भित भाषा है। हृदय के स्पंदन को, भावों को, विचारों को इतने सुन्दर ढंग से पाठक के पास और किसी दूसरी भाषा के माध्यम से नहीं पहुंचाया जा सकता । हिन्दी के शब्द मोती होते हैं, जिसे पिरोने के बाद वाक्य एक सुन्दर मोतियों की माला के समान उभरते हैं । समय आ गया है कि चुनौतियों से पार पाया जाए । इस भगवनवाणी को हर एक हृदय में उमंग के साथ पहुंचाया जाए । राजभाषा हिन्दी के विकास के लिए सार्थक कदम उठाने का समय आ गया है। कवि कहता है:-

''है अंधेरी रात, पर दीपक जलाना कब मना है।''

आने वाली पीढ़ी को यह शिक्षा दी जाए कि हिन्दी का ज्ञान भी उतना ही आवश्यक है जितना की अन्य भाषाओं का । एक प्रयास की आवश्यकता है, एक कदम बढ़ाने की देर है।

''कौन कहता है आसमां में सुराख नहीं होता,<br>इक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों ।''

जय हिन्दी ! जय हिन्द !

********

**हिन्दी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का स्रोत है ।**

**- सुमित्रानन्दन पंत**

# "वृक्ष संरक्षण"

(हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त लेख)

कलावती रावत
वरि.अभियंता (सिविल)

पृथ्वी बहुत ही सुन्दर ग्रह है जिस पर सभी को रहने के लिए आश्रय प्राप्त है फिर चाहे वह मनुष्य हो या पशु-पक्षी या फिर "वृक्ष" । सभी को जीवित रहने के लिए शुद्ध वातावरण की अवश्यकता होती है। मनुष्य एवं पशु-पक्षी आदि सभी जीवित रहने के लिए वृक्षों, पेड़-पौधों पर ही आधारित हैं। जैसे भोजन के लिए मनुष्य तथा जानवर आदि सभी अपनी आवश्यकतायें इन्हीं से पूर्ण करते हैं ।

मनुष्य को जीवित रहने के लिए शुद्ध हवा की आवश्यकता होती है जोकि वृक्ष ही हमें प्रदान करते हैं । "वृक्ष एक वरदान हैं इस पृथ्वी के लिए – जीवन को जीवित रखने के लिए"। पर मनुष्य ने अपने स्वार्थों के लिए कई प्रकार से इनका दोहन प्रारंभ कर दिया फिर चाहे वह भोजन के रूप में हो या फिर अपने आराम के लिए वृक्षों को काट कर फर्नीचर आदि का निर्माण या फिर थोड़े से आर्थिक लाभ के लिए इन्हें नुकसान पहुंचाना। मनुष्य को यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि यदि वह इन्हें सुरक्षित नहीं रखेगा तो उसका कल कैसे सुरक्षित होगा।

**"वृक्ष है तो कल है"**

हमें अपने आसपास की वायु को शुद्ध रखने के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना चाहिए तथा उससे भी महत्वपूर्ण जो वृक्ष पहले से ही उपस्थित हैं उन्हें संरक्षित करना चाहिए। जिस प्रकार हम अपने आने वाली पीढ़ी के लिए धन संरक्षित करते हैं ताकि उनका भविष्य आरामदायक हो, ठीक उसी प्रकार हमें उन्हें शुद्ध वातावरण भी वृक्षों को सहेज कर प्रदान करना चाहिए ताकि उनका भविष्य आरामदायक के साथ-साथ स्वस्थ जीवन वाला भी हो। अंत में कुछ पंक्तियों द्वारा अपने लेख का समापन करना चाहूंगी :-

वृक्ष है जीवन का आधार
निर्भर इन पर मनुष्य एवं जीव-जंतु
चाहे हो वह भोजन या फिर श्वास
बिना इनके संभव नहीं जीवन संसार ।

वृक्ष है जीवन का आधार
सुरक्षित रखें इन्हें और
भविष्य बनाए साकार......

वृक्ष है जीवन का आधार ।

********

## सेवानिवृत्ति

जुलाई-सितम्बर, 2016 तिमाही के दौरान निम्नलिखित अधिकारी/कर्मचारी वाप्कोस की नियमित सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए।

- श्री अमर कुमार, कार्यकारी निदेशक
- श्री सुधीर कुमार, मुख्य प्रबंधक
- श्री रामरथी पाल, अपर मुख्य प्रबंधक
- श्री आर.के.चौहान, वरि.ड्राइंग अधिकारी
- श्रीमती सरूली देवी रावत, संदेशवाहक
- श्री एस.विजय राव, कार्यकारी निदेशक

## वाप्कोस के क्षेत्रीय/फील्ड कार्यालयों में दिनांक 01.09.2016 से 15.09.2016 तक आयोजित किए गए 'हिन्दी पखवाड़े' के संबंध में

**वाप्कोस के फील्ड/क्षेत्रीय कार्यालयों में 'हिन्दी दिवस' व 'हिन्दी पखवाड़े' का आयोजन किया गया। कुछ कार्यालयों से प्राप्त हिन्दी पखवाड़े की रिपोर्ट एवं झलकियां :-**

### गांधीनगर कार्यालय

वाप्कोस के गांधीनगर क्षेत्रीय कार्यालय में दिनांक 01 से 15 सितम्बर, 2016 तक 'हिन्दी पखवाड़े' का आयोजन किया गया । इस दौरान विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता क्षेत्रीय प्रबंधक ने की तथा क्षेत्रीय प्रबंधक ने अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक का संदेश सभी कार्मिकों को पढ़कर सुनाया। क्षेत्रीय प्रबंधक ने राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्रीय कार्यालय गांधीनगर में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी तथा सभी कार्मिकों से कार्यालय का अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने तथा गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2016-17 के वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करते हुए हिन्दी पत्राचार को बढ़ाने का अनुरोध किया । इस दौरान 14.09.2016 को **'हिन्दी दिवस'** का आयोजन किया गया जिसमें कार्मिकों ने बड़े उत्साह से भाग लिया और अपने विचार हिन्दी में प्रस्तुत किए ।

## चेन्नई कार्यालय

वाप्कोस के चेन्नई कार्यालय में दिनांक 01 से 15 सितम्बर, 2016 तक 'हिन्दी पखवाड़ा' मनाया गया और दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को **'हिन्दी दिवस'** का आयोजन किया गया। इस दौरान अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक का संदेश सभी कार्मिकों को पढ़कर सुनाया गया तथा इस संदेश का सही मायने में अनुपालन करने पर जोर दिया। इस अवसर पर डा. आर.कृष्णन, उप मुख्य अभियंता ने हिन्दी के संबंध में संक्षिप्त एवं प्रभावशाली भाषण दिया। इस दौरान हिन्दी में सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्मिकों ने इस अवसर पर स्वयं रचित कविता पाठ पढ़कर सुनाया, हिन्दी कविता व कबीर के दोहों का पठन किया गया। हिन्दी पखवाड़े एवं हिन्दी दिवस को मध्य नजर रखते हुए चेन्नई कार्यालय में करीब 11 हिन्दी पुस्तकों की खरीद की गई और सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों से अनुरोध किया गया कि वे समय निकालकर इन पुस्तकों को पढ़कर अपना हिन्दी का ज्ञान और बढ़ाएं।

## बैंगलूरू कार्यालय

वाप्कोस के बैंगलूरू कार्यालय में दिनांक 01 से 15 सितम्बर, 2016 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया। इस दौरान दिनांक 14.09.2016 को 'हिन्दी दिवस' मनाया गया तथा हिन्दी कार्यशाला व विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का भी आयोजन किया गया जिसमें अपर मुख्य अभियंता द्वारा राष्ट्रभाषा का महत्व और इतिहास के बारे में जानकारी दी गई । अपर मुख्य अभियंता द्वारा बोलचाल में हिन्दी भाषा बोलने के लिए सभी कार्मिकों का

मार्गदर्शन किया । कार्मिकों को हिन्दी में हस्ताक्षर करने के लिए प्रोत्साहित किया तथा हिन्दी दस्तावेजों का लेखन पठन किया गया ।

## हैदराबाद कार्यालय

वाप्कोस के हैदराबाद कार्यालय में दिनांक 14 सितम्बर, 2016 को **'हिन्दी दिवस'** का आयोजन किया गया । इस दौरान निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें भाग लेने वाले प्रतिभागियों ने विभिन्न विषयों पर अपने-अपने विचार हिन्दी में प्रस्तुत किए तथा विजेताओं को पुरस्कार भी दिए गए।

## कोलकाता कार्यालय

कार्यालय के कामकाज में राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने और उसके उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी वाप्कोस के कोलकाता कार्यालय में दिनांक 01.09.2016 से 15.09.2016 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया । इस दौरान कार्यालय के क्षेत्रीय प्रबंधक की अध्यक्षता में श्रुतलेख, शब्दावली, शुद्ध लेख एवं शुद्ध वाचन, निबंध एवं घोष वाक्य आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इस दौरान 14 सितम्बर, 2016 को **'हिन्दी दिवस'** के रूप में मनाया गया तथा इस दिन तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें सभी अभियंताओं ने अपने-अपने कार्यों से संबंधित विषयों पर एक तकनीकी

भाषण दिया जिससे अन्य कर्मचारियों को कामकाज के तकनीकी पक्ष के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली।

**<u>चण्डीगढ़ कार्यालय</u>**

वाप्कोस के चण्डीगढ़ कार्यालय में दिनांक 01 से 15 सितम्बर, 2016 तक **'हिन्दी पखवाड़े'** का आयोजन किया गया । पखवाड़े के दौरान कर्मचारियों को कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग से संबंधित जानकारी दी गई तथा हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए उन्हें हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया ।

********

# मेरा नीम

एस.विजयराव
कार्यकारी निदेशक(का./प्र. व वि.)

हम लोग पहले किराये के घर में रहते थे। फिर काफी सालों बाद हमने अपना घर लिया। नये घर के साथ-साथ, सपने भी नये-नये थे। मैंने घर के सामने एक नीम का पौधा लगाया। उस पौधे की हर हरकत जो उसे एक बड़ा पेड बनने के दौरान आई, मैं बड़ी ही उमंग और उत्सुकता से निहारता था। जैसे एक मां अपने बच्चे की हर हरकत को देखकर इतराती है, ठीक उसी तरह का हाल मेरा भी था। उस छोटे से पौधे के हर उभार को मैं निहारते नहीं थकता था। मैं चूंकि चौथी मंजिल पर रहता था, मुझे ऊपर से दिन में दो-तीन चक्कर लगाने पड़ते थे उसे पानी देने के लिए। कई बार तो बहुत थकावट का अहसास होता था। पर उसे बढ़ते देखकर सारी थकावट मानो कोसों दूर हो जाती थी। मजे की बात तो देखिए कई बार जब मैं अपने किसी पड़ोसी, जो नीचे ही रहते थे, से पौधे में पानी देने के लिए पानी मांगता ताकि मुझे ऊपर से न लाना पड़े तो वो लोग नाक मुंह बिचकाकर एक-आध गिलास मुझे दे देते थे और ऐसे दिखाते जैसे कि मुझ पर एहसान कर रहे हों और कभी-कभी तो मना ही कर देते थे कि उनके घर पानी नहीं है।

देखते ही देखते पौधे ने पेड़ का रूप ले लिया। मैं उसे देख फूला नहीं समाता था जैसे एक बाप अपने जवान बेटे को देख-देख कर खुश होता है। एक दिन सुबह-सुबह मैंने देखा कि मेरा पड़ोसी जो पानी देने के लिए मेरे से मिन्नतें करवाता था, वो पेड़ की पत्तियां, डाली दांत साफ करने के लिए तोड़ रहा था। देख कर मुझे काफी गुस्सा आया। उस बात को अभी एक हफ्ता ही बीता होगा कि मैंने देखा एक दूसरा पड़ोसी उस पेड़ की शाखाओं में रस्सी बांधकर अपने घर की तरफ खींचकर बांध रहा था ताकि घर में उस पेड़ की छाया आ सके। यह सब देख मेरा मन दुखा। मेरी पत्नी जो मुझे देख रही थी, कहने लगी आपने यह पेड़ सभी लोगों के फायदे के लिये लगाया है और जब सब लोग उससे फायदा उठा रहे हैं तो आप गुस्सा क्यों खा रहे हैं? उसके प्रश्न का मेरे पास कोई उत्तर नहीं था।

मुझे याद है जब यह पेड़ अपना रूप ले रहा था, टहनियां इधर-उधर फैल रही थीं, तब मैंने अपनी कालोनी के माली से कहा कि भैया जरा इसकी छंटाई कर दो, उसने इस काम के लिए मेरे से कुछ रूपयों की मांग की और मैंने उसे दिये भी। परन्तु उसने छः महीने लगा दिए पेड़

को सही रूप देने में । बाद में मुझे समझ आया कि उसे अपने घर में जब भी लकड़ी जलाने के लिए चाहिये होती थी, तब वह इसे काट लेता था छंटाई करने के बहाने । यह सब देखकर मेरा दिल बहुत दुखता था ।

हर एक इंसान अपने-अपने के लिए पेड़ का इस्तेमाल करता रहा पर जब उसे पनपने के लिए देखभाल की जरूरत थी तो सिर्फ मेरे द्वारा उसे मिली । अब फल खाने के लिए सब तैयार बैठे हैं ।

एक दिन जब मैं उस पेड़ के पास से गुजर रहा था अचानक ऐसा लगा कि वो मुझसे कुछ कह रहा है । वह बोला कि दुनिया कहती है कि मेरे बिना वो नहीं पर मैं कहता हूं कि आपके बिना मैं नहीं ।

********

# महिला सशक्तिकरण

हैदराबाद कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम

श्री सी.एच.उदयश्री
डा.ए.आ., हैदराबाद कार्यालय

अपनी निजी स्वतंत्रता और स्वयं के फैसले लेने के लिए महिलाओं को अधिकार देना महिला सशक्तिकरण है। महिला सशक्तिकरण, भौतिक या अध्यात्मिक, शारीरिक या मानसिक सभी स्तर पर महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा कर उन्हें सशक्त बनाने की प्रक्रिया है।

महिला सशक्तिकरण के उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इसे हर एक परिवार में बचपन से प्रचारित व प्रसारित करना चाहिए। ये जरूरी है कि महिलाएं शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से मजबूत हों। आज भी कई वजह से कम उम्र में विवाह और बच्चे पैदा करने का चलन है। महिलाओं को मजबूत बनाने के लिए महिलाओं के खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक अलगाव तथा हिंसा आदि को रोकने के लिए सरकार कई सारे कदम उठा रही है।

महिलाओं की समस्याओं का उचित समाधान करने के लिए महिला आरक्षण बिल-108, संसद में महिलाओं की 33% हिस्सेदारी ये सुनिश्चित करता है। दूसरे क्षेत्रों में भी महिलाओं को सक्रिय रूप में भागीदार बनाने के लिए कुछ प्रतिशत सीटों को आरक्षित किया गया है। महिला सशक्तिकरण के द्वारा ये संभव है कि एक मजबूत अर्थव्यवस्था के महिला-पुरुष समानता वाले देश को पुरुषवादी प्रभाव वाले देश से बदला जा सकता है।

पंडित जवाहर लाल नेहरु द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य "लोगों को जगाने के लिये", महिलाओं का जागृत होना जरुरी है। एक बार जब वो अपना कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है। भारत में, महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाले उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरुरी है जैसे दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, बलात्कार, वैश्यावृति, मानव तस्करी आदि ।

राजा राम मोहन रॉय की लगातार कोशिशों की वजह से ही सती प्रथा को खत्म करने के लिये अंग्रेज मजबूर हुए। बाद में दूसरे भारतीय समाज सुधारकों (ईश्वर चंद्र विद्यासागर, आचार्य विनोभा भावे, स्वामी विवेकानंद आदि) ने भी महिला उत्थान के लिये अपनी आवाज उठायी

और कड़ा संघर्ष किया। भारत में विधवाओं की स्थिति को सुधारने के लिये ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने अपने लगातार प्रयास से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 की शुरुआत करवाई।

कानूनी अधिकार के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये संसद द्वारा पास किये गये कुछ अधिनियम हैं - एक बराबर पारिश्रमिक एक्ट 1976, दहेज रोक अधिनियम 1961, अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम 1956, मेडिकल टर्म्नेशन ऑफ प्रेग्नेंसी एक्ट 1987, बाल विवाह रोकथाम एक्ट 2006, लिंग परीक्षण तकनीक (नियंत्रक और गलत इस्तेमाल के रोकथाम) एक्ट 1994, कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन शोषण एक्ट 2013।

महिलाएँ ज्यादा खुले दिमाग की होती हैं और सभी आयामों में अपने अधिकारों को पाने के लिये सामाजिक बंधनों को तोड़ रही हैं। हालाँकि अपराध इसके साथ-साथ चल रहा है मनुष्य, आर्थिक या पर्यावरण से संबंधित कोई भी छोटी या बड़ी समस्या का बेहतर उपाय महिला सशक्तिकरण है। पिछले कुछ वर्षों में हमें महिला सशक्तिकरण का फायदा मिल रहा है। महिलाएँ अपने स्वास्थ्य, शिक्षा, नौकरी तथा परिवार, देश और समाज के प्रति जिम्मेदारी को लेकर ज्यादा सचेत रहती हैं। वो हर क्षेत्र में प्रमुखता से भाग लेती हैं और अपनी रुचि प्रदर्शित करती हैं।

महिला सशक्तिकरण के कुछ नारे

- सशक्त नारी से ही बनेगा सशक्त समाज.
- महिलाओं को दे शिक्षा का उजियारा, पढ़-लिख कर करें रोशन जग सारा
- महिलाओं को दो इतना मान, की बड़े हमारे देश को शान
- नारी का करो सन्मान तभी बनेगा देश महान
- बराबरी का साथ निभाएं, महिलाएं अब आगे आएं
- जिम्मेदारी संग नारी भर रही है उड़ान, ना कोई शिकायत ना कोई थकान
- अबला नहीं है बिल्कुल नारी, संघर्ष रहेगा हमारा जारी
- मैं भी छू सकती हूं आकाश.... मौके की है मुझे तलाश

भारतीय समाज में सच में महिला सशक्तिकरण लाने के लिये महिलाओं के खिलाफ बुरी प्रथाओं के मुख्य कारणों को समझना और उन्हें हटाना होगा जो कि समाज की पितृसत्तामक और पुरुष प्रभाव युक्त व्यवस्था है। जरुरत है कि हम महिलाओं के खिलाफ पुरानी सोच को बदले और संवैधानिक और कानूनी प्रावधानों में भी बदलाव लाये।

********

# दान की महत्ता – 3
## (श्राद्ध कर्म)

प्रवीन कुमार
व.म.प्र.

''सभी प्राणियों के बार-बार इतने अनगिनत जन्म हुए हैं कि ऐसा कोई भी प्राणी नहीं जो कि किसी न किसी जन्म में दूसरे प्राणी का माता, पिता, भ्राता, बहन, पुत्र व पुत्री न हुए हों''।

बुद्ध, स.निकाय 15.14-15.19

भगवान बुद्ध ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि छोटे-बड़े सभी प्राणी करूणा के पात्र हैं, सभी अपने हैं । आज का विज्ञान कहता है कि 95 प्रतिशत ब्रह्मांड अदृश्य है । यह अदृश्य समष्टि हमारे चारों ओर विद्यमान है तथा हमारे जगत के भौतिक पदार्थों के आर पार हो जाती है, विज्ञान इसे केवल गुरूत्वाकर्षण अथवा ऊर्जा संतुलन के द्वारा ही जान सकता है । विज्ञान ने इसे डार्क एनर्जी (Dark Energy) तथा डार्क मैटर (Dark Matter) का नाम दिया है अर्थात अज्ञात ऊर्जा एवं अज्ञात पदार्थ। स्ट्रिंग थ्योरी (String Theory) के गणितीय विश्लेषण द्वारा विज्ञान यह भी मानता है कि हमारे चारों ओर अनेक आयामों (Dimensions) का भी होना संभव है (जिनमें अनेक प्राणी हो सकते हैं)। ऐसा लगता है कि विज्ञान अब धर्म एवं अध्यात्म के निकट प्रतीत होने लगा है । पिछले अंकों में प्रेत अवस्था तथा देव अवस्था की चर्चा की गई । अदृश्य समष्टि के धर्म को समझने के लिए और भी उदाहरण यहां प्रस्तुत हैं :-

<u>दान से मोक्ष तक (संसार मोचक कथा)</u> : मगध के कुछ ग्रामों में धर्म संबंधी मिथ्या दृष्टि रखने वाले कई लोग थे । इट्ठकवती नामक ग्राम में छोटे-छोटे प्राणियों की हिंसा करने वाली एक स्त्री को 500 वर्ष के लिए भूख और प्यास से तड़पते हुए प्रेत अवस्था की प्राप्ति हुई । इसके बाद वह उसी परिवार में फिर जन्मी । बुद्ध के प्रमुख शिष्य सारिपुत्र एक बार शिष्य मंडल के साथ भगवे कपड़ों में उस ग्राम के द्वार के समीप से निकले जहां कुछ बालिकाएं क्रीड़ामग्न थीं । बालिकाओं ने इस शिष्य मंडल को प्रणाम किया । परन्तु उस (पूर्व प्रेत) बालिका में श्रृद्धा न थी फिर भी अन्य बालिकाओं ने उसे धकेलकर स्थिवर सारिपुत्र से प्रणाम करने को कहा । स्थिवर सारिपुत्र ने करूणापूर्वक इस बालिका के भूत व भविष्य को दिव्य दृष्टि से जाना और सबकी मंगल कामना करते हुए वहां से प्रस्थान किया । कुछ वर्षों के पश्चात, बड़े होने पर संतानोत्पत्ति के समय मृत्यु होने पर यह बालिका फिर से प्रेत अवस्था को प्राप्त हुई तथा उसने नग्न, दुवर्ण, भयंकर व क्षीणकाय रूप को प्राप्त किया तथा स्थिवर

सारिपुत्र के समक्ष सहायता हेतु पहुंची । स्थिवर सारिपुत्र ने पूछा कि किन कर्मों के कारण उसकी यह स्थिति हुई है। प्रेती ने कहा कि उसके परिवारजनों ने धर्म के मार्ग से उसे कभी अवगत न कराने के कारण उसने सद्धर्म का अनुसरण नहीं किया और अब वह पांच सौ वर्षों से भूख और प्यास से भटक रही है। प्रकाश के स्तंभ के समान स्थिवर सारिपुत्र से उसने प्रार्थना की कि वे उसके लिए कोई दान कर उसे प्रेत अवस्था से मुक्त कराएं ।

करूणामय स्थिवर सारिपुत्र ने कुछ तपस्वी बौद्ध भिक्षुओं को एकत्र कर सबको भोजन का एक ग्रास, एक वस्त्र का भाग तथा भिक्षापात्र में जल, दक्षिणा में देकर इस दान का पुण्यफल इस प्रेती को समर्पित कर दिया। इस परम पवित्र पुण्यफल से प्रकाशित होकर प्रेती तत्क्षण स्वर्ग को प्राप्त कर दिव्य भोगों से सम्पन्न, सुन्दर रूप को प्राप्त हुई और दमकते हुए स्थिवर सारिपुत्र के निकट वंदना करने पहुंची। जानते हुए भी सारिपुत्र ने उससे पूछा कि ''सभी दिशाओं को प्रकाशित किए हुए, कौन हो तुम देवी जो सितारे के समान दमक रही है, जो सभी दिव्य भोगों से सम्पन्न है। बताओ हे कांतिपूर्ण महानुभावे''।

देवी (जो प्रेती थी) ''मैं क्षीणकाय, नग्न, भूखी और प्यासी प्रेत अवस्था में थी परन्तु हे करूणामय मुनिवर, जब आपने मेरे निमित्त जो भोजन का ग्रास, वस्त्रभाग तथा जल दान में दिया उसी पुण्यफल से अब मैं 1000 (देव) वर्षों की आयु को प्राप्त हुई हूं (एक देव दिवस में 50 मानव वर्ष तथा देव रात्रि 50 मानव वर्ष मानी गई है) यहां मैं आनंद में हूं जहां है प्रचुर विभिन्न प्रकार का भोजन । विभिन्न प्रकार के आकाशीय वस्त्र हैं यहां, जैसे कि समृद्धि थी महाराजा नंदराजा के यहां । जल के दान फल स्वरूप मेरे पास है कई गुलाबी व नीले कमल पुष्पों से सम्पन्न सुवासित शुद्ध जल कुण्ड । मैं इन सबका आनंदमय भयमुक्त हो उपभोग करती हूं और अब आपकी वंदना करने आई हूं।''

बुद्ध ने महाराज नंदराजा की कथा भी व्यक्त की । एक वन में एक गृहस्थ ने एक पूर्णज्ञानी प्रत्येकबुद्ध को वस्त्र बनाने के लिए चिथड़े चुनते देखा (प्रत्येकबुद्ध समाधिजन्य पूर्णज्ञान सम्पन्न होते हैं परन्तु वे अकेले ही अज्ञात विचरण करते हैं तथा बाद में मोक्ष को प्राप्त होते हैं)। गृहस्थ ने श्रद्धापूर्वक प्रत्येकबुद्ध को अपने ही वस्त्र दान कर दिए । इस दान के पुण्य फल से वह गृहस्थ मृत्युपरांत तावतिंस स्वर्गलोक (जहां आयु 3.6 करोड़ वर्ष होती है) में अनेक सुख भोगों से सम्पूर्ण हो, उत्पन्न हुआ तथा आयु समाप्त होने पर फिर से मनुष्य लोक में उत्पन्न हुआ तथा राजा की एकमात्र पुत्री से विवाह कर, राजा की मृत्यु के बाद स्वयं नंदराजा नामक राजा बना । उसने न्याय पूर्वक शासन किया तथा अपनी पत्नी के साथ सभी दिशाओं में खोज खोजकर दरिद्र, धर्मवान व्यक्तियों तथा समाधि सम्पन्न मुनियों को प्रचुर दान दिया । एक बार राजा व रानी ने हिमालय में एक (मोक्ष के ज्ञानी) अरिहंत प्रत्येकबुद्ध को देखकर

उन्हें राजधानी आने का निमंत्रण दिया जिस पर प्रत्येकबुद्ध ने निश्चित दिवस पर आने की सम्मति दी । प्रत्येकबुद्ध ने आकाश मार्ग से आकर महल के उत्तरी द्वार पर पर्दापण किया जहां राजपरिवार ने उनका स्वागत किया तथा उन्हें महल में ही स्थान देकर उनके शिष्य बन गए। प्रत्येकबुद्ध की मृत्यु के पश्चात उनके लिए उनके अवशेषों समेत एक समाधि स्थल की स्थापना की गई। उन नंदराजा का ज्येष्ठ पुत्र सन्यासी बना तथा सारे परिवार ने तपस्या के मार्ग को अपना कर समाधिआनंद का अनुभव किया तथा मृत्युपरांत उनका ऊंचे ब्रह्मलोक में जन्म हुआ जहां की (कई कल्प) आयु समाप्त होने पर पति-पत्नी ने पृथ्वी पर फिर से जन्म लिया । परन्तु उन्होंने सन्यासी जीवन ही अपनाया । वे ही गौतम बुद्ध के प्रमुख शिष्य महाकाश्यप बने तथा पत्नी भद्रकपिलानी प्रमुख शिष्या बनीं तथा दोनों ने अंत में तपस्या कर मोक्ष को प्राप्त किया ।

संसार मोचक पेतवत्थु 2.1

अतः इसी कारण इस कथा का नाम संसार मोचक कथा कहा जाता है । महाकाश्यप की परम उच्च अवस्था के कारण ही भगवान बुद्ध ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया तथा बुद्ध के निर्वाण (मृत्यु) पश्चात कार्यभार संभाल कर उन्होंने सभी शिष्यों की प्रथम परिषद बुला कर संगायन कराया तथा उनके प्रयासों के कारण ही बौद्ध सूत्रों को भली भांति संग्रहित किया गया ।

**दंड से मुक्ति** : कई कल्प पूर्व एक बुद्ध हुए (संसार में अनेक बुद्ध हुए हैं जो कि देव मनुष्यों के गुरू बन धर्म की पुनः स्थापना करते हैं) उस समय उनके सम्बधियों ने उनकी सेवा करके अपूर्व पुण्य अर्जित करने का निश्चय किया, परन्तु उन लोगों में प्रतिस्पर्धा होने लगी जिसके कारण उनके कुछ संबंधी उनपर ध्यान न दिए जाने के कारण क्षुब्ध हो गए और उन्होंने एक बार भगवान के सेवार्थ भोजन समेत उनके भोजनगृह को ही आग लगा कर जला दिया। कालांतर में, सेवा भाव वाले व्यक्ति पुण्य के कारण एक स्वर्ग से दूसरे स्वर्ग में उत्पन्न हुए तथा क्षुब्ध व्यक्तियों को भयंकर अपुण्य के कारण अनेक नरकों का सामना करना पड़ा। (बुद्ध जोकि ब्रह्मांड में अग्र हैं, उन को दुखी करने का परिणाम भी घोर अपुण्य है) बाद में एक कल्प में भगवान काश्यप नामक अन्य बुद्ध हुए, उस समय वे विकर्मी, प्रेत अवस्था में जन्म लेकर भूख और प्यास की यातना सहन करने लगे। दूसरे व्यक्तियों को अपने प्रेत-पूर्वजों को दान देकर शांति देते देख उनकी भी इच्छा हुई तथा उन्होंने काश्यप बुद्ध से स्वयं के लिए प्रार्थना की। काश्यप बुद्ध ने उन्हें बताया कि बुद्ध के प्रति अपराध को केवल बुद्ध ही क्षमा कर सकते हैं। भविष्य में उनके एक पुण्यवान संबंधी महाराज बिंबसार होंगे तथा उस समय संसार में गौतम नामक बुद्ध होंगे। जब महाराज बिंबसार अपने प्रेत पितरों के तर्पण के लिए भगवान गौतम बुद्ध को भोजन कराएंगे, तब ही उनकी प्रेत अवस्था से मुक्ति होगी ।

कालांतर में सैंकड़ों वर्षों पश्चात् जब पृथ्वी पर भगवान गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए तब स्वर्ग में उपस्थित वे पुण्यवान संबंधी भी धरती पर जन्में । उनमें से महाराज बिंबसार हुए तथा अन्य भी कई राजपरिवार में जन्मे तथा अन्य उच्च ब्राह्मण कुल में तथा धनवान परिवारों में जन्मे। महाराज बिंबसार अपने पुण्य के कारण भगवान बुद्ध की ओर आकृष्ट हुए तथा उन्होंने ध्यान की दीक्षा ली तथा शीघ्र ही स्रोतापन नामक प्रथम ध्यानसमाधि आनंद का अनुभव किया (इस समाधि द्वारा मेरूदण्ड [Spine] एवं मस्तिष्क में तीव्र विद्युतधाराप्रवाह, दिव्य प्रकाश एवं परम आनंद का अनुभव होता है तथा वह व्यक्ति मुक्ति के स्रोत में आगे बढ़ता जाता है तथा केवल सात उच्च जन्मों में तपस्या कर मुक्ति/मोक्ष पा लेता है)। कृतज्ञ महाराज बिंबसार ने भगवान बुद्ध व उनके अनेक शिष्यों को भोज पर यह कह कर आमंत्रित किया कि जब वे राजकुमार थे तभी से उनकी इच्छा थी कि वे सर्वोच्च मोक्ष का ज्ञान प्राप्त बुद्ध के शिष्य बनकर उन्हें भोजन कराएं ।

अग्निपूजा (यज्ञ) करने वाले अनेक जटाधारी ब्राह्मण जटिल मुनियों को दीक्षा देकर, तपस्या उपरांत समाधि ज्ञान प्राप्त अब तक भगवान बुद्ध के लगभग एक हजार शिष्य हो चुके थे। जब वे आश्रम से निकल कर चले तो देवराज इन्द्र, अन्य देवों के साथ ब्राह्मण वेश में मनुष्य रूप में प्रकट हुए तथा भगवान बुद्ध समेत इस शिष्यमंडल से आगे, नृत्य करते हुए, उनकी वन्दना के इस प्रकार गीत गाते हुए चलने लगे :

*परम संयमी हैं तथा संयमी पूर्वजटिलमुनियों समेत, विमुक्तों में विमुक्त ।*
*मखमल पर रखे स्वर्ण पात्र समान, राजगृह में प्रवेश कर रहे हैं भगवान ।।*
*परम तपस्वी हैं तथा तपस्वी पूर्वजटिलमुनियों समेत, विमुक्तों में विमुक्त ।*
*मखमल पर रखे स्वर्ण पात्र समान, राजगृह में प्रवेश कर रहे हैं भगवान ।।*
*परम सन्त हैं तथा सन्त पूर्वजटिलमुनियों समेत, विमुक्तों में विमुक्त ।*
*मखमल पर रखे स्वर्ण पात्र समान, राजगृह में प्रवेश कर रहे हैं भगवान ।।*
*दस सर्वोच्च अवस्थाओं को प्राप्त, दस दिव्य शक्तिमान, दसधर्मविद ।*
*तथा दस (अर्हत) गुणवान, अपने हजार शिष्यों के साथ राजगृह में प्रवेश कर रहे हैं भगवान ।।*

सुन्दर शरीर रूपवान (इन्द्र) को देख कुछ लोगों ने पूछा कि कौन हैं ये वन्दना करने वाले । इस पर देवराज इन्द्र ने कहा :-

*"यो धीरो सब्बधि दन्तो, सुद्धो अप्पटिपुग्गलो ।*
*अरहं सुगतो लोके, तस्साहं परिचारकोति ।।"*
*धैर्यवान, परम संयमी, परिशुद्ध, मनुष्यों में अप्रतिम ।*
*अरिहंत, लोक में सुगत (परम गति वाले), उनका मैं परिचारक (सेवक) हूं ।।*
(उस समयकाल में भारत में देवराज इन्द्र की ही सबसे अधिक मान्यता थी)

इस प्रकार वे महाराज बिंबसार के भोज पर पहुंचे। (पिछले मनुष्यजन्म में देवराज इन्द्र भगवान बुद्ध के ही शिष्य थे तथा उनके बताए हुए सन्मार्ग से ही पुण्य प्राप्त कर मृत्युपरांत उन्होंने स्वर्गलोक में देवराज इन्द्र का पद पाया था, क्योंकि स्वर्ग की पूंजी/धन केवल पुण्य है जोकि दान, तप, शील आदि शुभ कर्मों द्वारा अर्जित किया जाता है)।

अब उन प्रेतों ने उस महल को चारों ओर से घेर लिया, इस आशा से कि अब उन्हें पुण्य प्राप्ति हो, उनकी निम्न प्रेत अवस्था से उन्हें मुक्ति मिलेगी परन्तु भोज में व्यस्त रहने के कारण महाराज बिंबसार ने दान का पुण्य किसी को समर्पित न किया । इस कारण उनके प्रेत पूर्वज अधीर हो उठे । महाराज बिंबसार को रातभर क्रन्दन व विलाप सुनाई दिया और सवेरे, परेशान, उन्होंने भगवान बुद्ध से बात की । भगवान बुद्ध ने उन्हें दिव्य दृष्टि दी जिसके द्वारा उन्होंने अपने महल के द्वारों और दीवारों के बाहर दुखी प्रेतों को उपस्थित देखा । भगवान ने कहा कि उन्हें किसी प्रकार के अनिष्ट की संभावना नहीं है परन्तु वे अगले दिन भोज को फिर से करें तथा इस बार वे दान का पुण्य इन प्रेत संबंधियों को समर्पित कर दें । अतः भोज का फिर से आयोजन किया गया तथा महाराज बिंबसार ने अंत में भोज के दान का पुण्य उन प्रेत संबंधियों को समर्पित कर उन्हें तृप्त कर दिया । इस प्रकार से परम पुण्य को पाकर उन प्रेतों को तत्क्षण प्रेत अवस्था से मुक्ति मिली तथा स्वर्ग में पहुंच उनका शरीर स्वस्थ एवं स्वर्ण के समान तेजोमय हो गया और अनेक भोज्य पदार्थ, वस्त्र आदि उनके समक्ष प्रकट हो गए ।

भोज के पश्चात भगवान बुद्ध ने प्रवचन दिया :-

''घर की दीवारों के बाहर तथा द्वारों पर हैं उपस्थित वे पितर प्रेत प्राणी, अपने वंशजों तथा संबंधियों से आशा करते हुए कि वे उनके निमित्त दान दें जिसके फल का उपभोग कर वे ऊर्जावान हों, स्वस्थ हों, क्योंकि प्रेत अवस्था में न है कोई धन अर्जन, न अन्न उपजाना, न व्यापार बल्कि वे हैं आश्रित केवल पुण्य पर जोकि जीवित उन्हें प्रदान करें । जिस प्रकार से जल ऊंचाई से गिराने पर नीचे की ओर बढ़ता है वैसे ही निमित्त किया गया पुण्य, प्रेत प्राणियों को प्राप्त हो, उन्हें संतुष्ट करता है, जिसके पश्चात् वे अपने जीवित संबंधियों व वंशजों के सुखपूर्ण जीवन की कामना करते हैं । मृतकों के लिए शोक रूदन किसी काम का नहीं अतः सभी इस सत्कर्म (दान) का अभ्यास करें तथा इसे अब से कर्तव्य ही माने । तपस्वियों के संघ पर किए गए उपकार का पुण्य फल बहुत है जोकि अव्यक्त पितर प्रेतों के साथ-साथ दान वान व्यक्तियों की मृत्युपरांत अवस्था में भी सुखदायी है।''

तिरोकुट्ट पेतवत्थु वण्णना, पेतवत्थु 1.5
एवं विनयपिटक महावग्ग 1.22

इस प्रकार से 84 हजार व्यक्तियों को सद्धर्म व सत्कर्म मार्ग का ज्ञान हुआ । अगले दिवस आवाहन कर भगवान बुद्ध ने देवताओं को भी आमंत्रित किया तथा उन्हें भी इस प्रकार प्रवचन दिया ।

कर्मों की गति तथा धर्म विषय अति गूढ है परन्तु सर्व के प्रति प्रेम व करूणा ही वह सत्य है जो कि मृत्युपरांत पुण्य बन कर साथ जाता है, अन्य कोई व्यक्ति, वस्तु व धन नहीं ।

********

एक बार रात्रि में कई देवता जेतवन विहार को प्रकाशित करते हुए, तथा भगवान बुद्ध की वन्दना करते हुए प्रकट हुए। उनमें से एक देवता ने कहा:

यो धम्मलद्धस्स ददातिदानं, उट्ठानवीरियाधिगतस्स जन्तु ।
अतिक्कम्मसो वेतरणिं यमस्य, दिब्बानि ठानाति उपेति मच्चो'ति ।।

अर्थात, जो धर्म द्वारा अर्जित किए हुए धन से दान करते हैं, पसीना बहा मेहनत कर जो दान करते हैं, मृत्युपरांत वे वैतरणी को पार कर, देवलोक में अपना स्थान प्राप्त करते हैं।

भगवान बुद्ध ने समर्थन करते हुए कहा :

सद्धा ही दानं बहुधा पसत्थं, दाना च खो धम्मपदंव सेय्यो ।
पुब्बे च हि पुब्बतरे च सन्तो, निब्बानमेवज्झगमुं सपञ्ञाति ।।

अर्थात श्रद्धा द्वारा दिया दान सदा प्रशंसित है, परन्तु धर्म की शिक्षा का दान पूर्व से पूर्व ही सुख का साधन है तथा प्रज्ञावान (समाधिसम्पन्न) इसके द्वारा निर्वाण (मोक्ष) भी प्राप्त कर सकते हैं ।

साधु सूत्र, संयुक्तनिकाय 1.33

# क्या आपने सलमा बांध देखा है?

अरूण अरोड़ा
मुख्य (आई.टी.)

मानव मस्तिष्क एक बहुत ही विचित्र वस्तु है। यह किसी भी अनुभव को साक्षात बनाने की क्षमता रखता है। मैं आप सभी के समक्ष एक अनुभव रखता हूं।

मैं अपनी पिछली नौकरी से त्याग पत्र देकर, वाप्कोस में कार्यग्रहण करने आ रहा था। मेरे मन में बहुत-सी शंका थीं क्योंकि मैं प्राइवेट सैक्टर से पब्लिक सैक्टर में आ रहा था और सोच रहा था कि पता नहीं कम्पनी कैसी होगी। यह भी पता नहीं था कि कम्प्यूटर का क्या कार्य होगा । मन में कई सवाल थे कि मैं कैसे कार्य करूंगा एवं अपनी जगह कैसे बनाऊंगा इत्यादि। वाप्कोस में कार्यग्रहण के पश्चात् मैंने जाना कि वाप्कोस आमतौर पर जल एवं विद्युत के क्षेत्र में कन्सल्टैंसी प्रदान करती है और यह भी पता चला कि वाप्कोस किन-किन देशों व भारतीय प्रांतो में कार्य कर रहा है। कुछ समय बाद मुझे मालूम हुआ कि वाप्कोस एक बांध का निर्माण कर रहा है और वह भी अफगानिस्तान में। अच्छा ? सुनते ही मेरी आंखों के सामने भाखड़ा बांध का अनुभव घूम गया। खैर बात आई-गई हो गई और मैं अपने कार्य में लग गया। फिर एक दिन मेरे हाथ में एक सर्कुलर दिया गया, जिसमें लिखा था कि दोपहर 2.00 बजे, आपको कैलाश आफिस के कान्फ्रेंस हॉल में सलमा बांध के संबंध में आयोजित बैठक में हर हाल में उपस्थित होना है। मैंने सोचा कि सलमा बांध में मेरा क्या काम? फिर विचार आया कि जरूर आई.टी से संबंधित कार्य होगा और इसी समझ के साथ मैंने अपनी तैयारी की और बैठक में उपस्थित हुआ। उस बैठक में हमारे सभी वरिष्ठ अधिकारी एवं परियोजना के अधिकारी उपस्थित थे। सर्वप्रथम, अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक महोदय ने उपस्थित अधिकारियों को सम्बोधित किया और उसके बाद उन्होंपे कहा कि आगे आप सभी को कार्यकारी निदेशक (सलमा) विस्तार से जानकारी देंगे। उनकी वाणी में हर्ष साफ झलक रहा था। कार्यकारी निदेशक (सलमा) ने कहा कि वह प्रेजेंन्टेशन के साथ एक फिल्म हमें दिखाना चाहेंगे। उस समय पता चला कि यह बैठक सलमा बांध के जलाश्य का गेट बंद करने तथा जलाश्य को भरना शुरू होने की खुशी में आयोजित की गई थी। उस समय तक भी मुझे अंदाजा नहीं हुआ था कि क्या हो रहा है। जब वह फिल्म चल रही थी तब मुझे समझ में आया कि बांध बनाना वह भी अफगानिस्तान जैसे देश में कितना बड़ा कार्य है। इस घटना से पहले अफगानिस्तान देश का नाम सुनते ही एक बहुत ही भयानक दृश्य मस्तिष्क में घूम

जाता था। कभी विश्व के नक्शे पर अफगानिस्तान जैसे देश का ध्यान ही नहीं जाता था। ऐसा लगता था कि यह कैसा देश है जहां कुछ भी अच्छा नहीं होता?

फिर समय बीतने के बाद एक और सर्कुलर प्राप्त हुआ, जिसमें लिखा था कि सलमा बांध जोकि अब अफगान-भारत मैत्री बांध के नाम से जाना जाएगा, का उदघाटन माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के हाथों हैरात में होगा और इस समारोह का प्रसारण मुझे रिकार्ड करना है। जब मैं रविवार, 4 अप्रैल, 2016 को प्रात: 8 बजे से प्रसारण रिकार्ड करने की तैयारी कर रहा था, तो मेरे मस्तिष्क में सवाल आया कि भारत सरकार एवं वाप्कोस के लिए आखिर इस बांध का इतना महत्व क्यों है? इस सवाल का उत्तर खोजते हुए मैं इतिहास में पहुंच गया, लगभग 1960 के दशक में। मुझे मालूम पड़ा कि सरदार मुहम्मद दाऊद खान, जोकि अफगानिस्तान के पहले राष्ट्रपति थे, उन्होंने हरिरूद नदी पर बांध का स्वप्न देखा था और फिर अफगानिस्तान आने वाले समय में युद्ध में लीन रहा। इस दौरान इस बांध को बनाने की कई कोशिशें की गईं परन्तु वे नाकामयाब रहीं और अंत में आज से 15 साल पहले सन् 2001 में यह कार्य वाप्कोस को दिया गया। इन्टरनेट द्वारा खोजते-खोजते यह भी पता लगा कि यह बांध अफगान लोगों के लिए कितना महत्व रखता है। तब मुझे समझ आया कि इस बांध को बनाने में वाप्कोस के पूरे सलमा अफगानिस्तान डिवीजन का कितना महत्वपूर्ण योगदान है जिनका दूर-दूर तक इस बांध से कोई लेना-देना नहीं था, अब मस्तिष्क एवं मन इस बांध से जुड़ने लगा। उदघाटन समारोह के दौरान कुछ चित्र ऐसे थे जिसमें अफगान नेशनल आर्मी के जवान एवं वाप्कोस के कार्यरत अधिकारी मिलकर नाच-गाने में लीन थे एवं आपस में अपनी खुशी बांट रहे थे। यह देख कर मन भर आया। सलमा बांध के लिए हेरात एवं समस्त अफगानिस्तान आभार का भाव व्यक्त कर रहा था जोकि उनके हर्ष उल्लास से साफ झलक रहा था, सम्पूर्ण वातावरण एवं चित्र इतने मनमोहक थे कि आज छ: महीने बाद भी वह मेरे मन एवं मस्तिष्क में वैसे ही विराजमान हैं। इस घटना की सारी सामग्री मुझे सोशल मीडिया पर डालने का कार्य भी दिया गया और क्योंकि मेरा मस्तिष्क अब काल्पनिक तौर से अफगानिस्तान में ही था, मुझे यह प्रतीत हो रहा था कि मैं भी इसका एक भाग हूं। प्रत्येक टिप्पणी जो किसी भी अफगान भाई/बहन ने की, वह आंखों के द्वारा दिमाग में नहीं बल्कि सीधा ह्रदय में उतर रही थी। इन सभी घटनाओं के बाद, सलमा बांध को एवं इस परियोजना में कार्यरत सलमा अफगानिस्तान डिवीजन का सम्मान किया गया तो अफगानिस्तान सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों एवं नेताओं ने भी समारोह की शोभा बढ़ाई। उनका अपने लोगों की और से सदभाव, आभार व उनका धन्यवाद अपने आप में ही एक अदभुद दृश्य था। इस समारोह में कार्य करना न केवल एक ज्ञान का सागर था अपितु अपने आप में ही एक सौभाग्य था।

अंत में मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि सलमा बांध एक ऐसा स्मारक है जो हर समय अफगानिस्तान में भारत के वाप्कोस के योगदान की कहानी कहेगा। यह बांध एक ऐसा प्रतिबिंब है जो यह दर्शाता है कि विश्व में हर एक प्राणी किसी भी परिस्थिति में एक बेहतर जीवन की कामना कर सकता है। यह प्रतीक है इस तथ्य का कि प्रत्येक व्यक्ति, जिसने इसमें लेशमात्र भी योगदान दिया, इतिहास के पृष्ठ में अमर हो गया। वाप्कोस के वर्तमान में कार्यरत अधिकारी व कर्मचारी और भविष्य में आने वाले कार्मिक भी गर्व से कह सकेंगे कि वे ऐसी संस्था में कार्य करते हैं जिसने एक समुदाय का जीवन सदैव के लिए परिवर्तित कर दिया और जहां तक मेरा प्रश्न है, मेरे लिए सबसे बड़ा सबक यह है कि योगदान चाहे जितना भी तुच्छ क्यों न हो, कभी व्यर्थ नहीं जाता। अनुभव चाहे अच्छा हो या बुरा आपके मस्तिष्क में है और मस्तिष्क ही उसे सरल बनाता है बस आवश्यकता है तो केवल लगन एवं निष्ठा की।

आज मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि हां मैंने सलमा बांध देखा ही नहीं बल्कि उसे जीया भी है।

********

## ☺☺ *हंसते-हंसते* ☺☺

संता एक पंडित को अपनी कुंडली दिखाने गया

पंडितः तुम्हारा नाम संता है

संताः जी पंडित जी

पंडितः और तुम्हारी पत्नी का नाम बंतो है

संताः जी पंडित जी

पंडितः और तुम्हारी एक दो साल की बेटी है

संताः कमाल हो गया पंडित जी आपको तो सब पता है

पंडितः और तू अभी दस किलो चावल लेकर आ रहा है

संता (पंडित के चरणों में गिर कर)- आप तो सर्वज्ञानी हैं पंडित जी, आपको सब ज्ञात है...कृपा करो..कृपा करो

पंडितः उठ बेवकूफ और दफा हो यहां से और अगली बार आए तो राशन कार्ड नहीं कुंडली लेकर आना।

****

# पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां

# पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां

# मै कश्मीर हूं

पल्लवी पांडे
सहायक प्रबंधक (कार्मिक)

सुना है कश्मीर हमारा स्वर्ग है...
जिसे पाने को धरती माँ की छाती रौंदी जाती है॥

हर दिन डर से कांपते, स्वर्गनिवासी (कश्मीरी) जीते हैं
हर कोने मे माँ के आंसू और लोगों की चीखें हैं॥

सुना है कश्मीर हमारा स्वर्ग है.... कश्मीर हमारा स्वर्ग है।

जिसे हासिल करने को सियासत खेली जाती है
जिसको पाने के लालच मे इंसानियत कुचली जाती है॥

क्या स्वर्ग इसी को कहते हैं, गर स्वर्ग इसी को कहते हैं
तो चल नर्क ढूंढने चलते हैं, चल नर्क ढूंढने चलते हैं॥

भारत को पहले बाँट दिया, एक हिस्सा हमने पाक दिया
कश्मीर न तुझको देंगे अब, हर दर्द का बदला लेंगे अब॥

कब तक अपनों को कुर्बान करें....
दर्दे-जुदाई का गम हम यूँ ही सहें॥

पूछो जाकर उन मांओं से...जिनने बेटे कुर्बान किये....
उस बीवी से... उन बच्चों से, जिनके तो घर अब टूट गए॥

अब तो आंखों का पानी भी सूख गया....
तिनके-तिनके का भी दिल टूट गया॥

आतंकों ने दिल छेदा है, मजबूर हमारे नेता हैं
पर कभी तो कोई आएगा, हर दर्द दफा कर जाएगा॥

करना था जो कर है यें चुके, अब सिर न किसी के आगे झुकें।
हम अपनी एकता और आशाओं से, धर्मों का अंतर दूर करें॥

हम हिन्दू क्या, हम मुस्लिम क्या,
नामों से फर्क झलकता है,
राम के साथ मैं, अल्ला की पूजा कर लूँगा,
तुम अपनी दरगाह में ही, राम नाम को जप लेना॥

चलो मिल कर कश्मीर को धरती का स्वर्ग बनाये हम
बस सुने नहीं "कश्मीर स्वर्ग है", इसे यथार्थ कर दिख लाये हम।

भारत का झंडा कश्मीर में आजादी से लहराए हम
आओ फिर से मिल कर "कश्मीर को स्वर्ग" बनाए हम
"कश्मीर को स्वर्ग" बनाए हम....

********

## त्याग पत्र

जुलाई-सितम्बर, 2016 तिमाही के दौरान निम्नलिखित कार्मिकों ने वाप्कोस की सेवाओं से त्याग पत्र दिया।

- श्री अमित गुप्ता, अभियंता
- श्री रचित व्यास, अभियंता
- श्री पुष्पेन्द्र कुमार विद्यार्थी, कनि.सहायक
- श्री जुल्फीकर, अभियंता
- श्री अजय सिंह, अभियंता
- श्री दीपक कुमार, अभियंता

# हार्ट अटैक के लक्षण

1. **छाती में बेचैनी**

   छाती के बीच में बेचैनी-दबाव, दर्द, जकड़न और भारीपन का अहसास होता है, ये अवस्था कुछ मिनट तक रह कर या तो गायब हो जाती है, या फिर लौट आती है। (अगर ये 30 मिनट तक जारी रहती है या सॉरबिटेट 5 मिग्रा के इस्तेमाल से भी राहत नही मिलती है तो ये हार्ट अटैक का पुख्ता लक्षण हैं।)

2. **छाती के अलावा शरीर के अन्य हिस्सों में भी बेचैनी**

   बेचैनी (दर्द या भारीपन) बाहों, कमर, गर्दन और जबड़े में भी महसूस हो सकती है। सीने में बेचैनी, बांहों, कंधों, जबड़े या गर्दन और कभी-कभी यहां से सीने तक भी पहुंच सकती है।

3. पेट के ऊपरी हिस्से में भराव, एसिडिटी और अपच के साथ दर्द की शिकायत कम होती है। इस दर्द में एंटासिड का असर नही होता, इन लक्षणों की अनदेखी नही करनी चाहिए और संभावित हार्ट अटैक के लिए इनकी जांच की जानी चाहिए।

4. **सांस ठीक से न आना**

   छाती में दर्द शुरू होने से पहले सांस लेने में परेशानी भी हो सकती है या दर्द इससे पहले भी शुरू हो सकता है,अन्य लक्षण उपरोक्त लक्षणों के साथ-साथ उल्टी आने, पसीना छूटने या चक्कर आने की शिकायत भी हो सकती है। कभी-कभी बिना दर्द हुए सांस न आने या दम घुटने जैसे एकमात्र लक्षण भी दिखाई दे सकते हैं।

उपरोक्त में से किसी भी संभावित हार्ट अटैक सी परिस्थिति में घर पर ही प्राथमिक चिकित्सा मेडिकल सहायता मिलने से पहले ऐसे व्यक्ति को 300 मिग्रा एस्पिरिन (Ecosprin 150 की 2 गोली) दी जा सकती है। एस्पिरिन से खून पतला हो जाता है और खून का थक्का घुल जाने से खून अवरूद्ध रक्तवाहिका से गुजर जाता है। सबसे अच्छा तो यह है कि एस्पिरिन की 1 गोली को चूरा करके इसे जबान के नीचे रख लिया जाए ताकि ये जल्दी से खून में घुल जाए और 1गोली पानी में घोलकर दी जा सकती है और अगर ये एस्पिरिन पानी में घुलनशील हो तो इसे आधा गिलास पानी में घोल कर पिलाया जा सकता है। (जिन लोगों को पेट का अल्सर हो और जिन्हें एस्पिरिन से एलर्जी हो, उन्हें एस्पिरिन नहीं दी जानी चाहिए)।

## अब आगे क्या करें?

आप फौरन डाक्टर के पास जाएं। सबसे अच्छा ये होगा कि आप किसी ऐसे हस्पताल जाएं जहां ई सी जी और खून का टेस्ट CPK-MB या सबसे जरूरी Troponin-T अथवा Troponin-I किया जा सके।

## हृदय घात संबंधित भ्रांतियां –

किसी रात को या दिन का व्यस्त समय शुरू होने के पहले आपकी छाती में दर्द शुरू हुआ। कहीं हार्ट अटैक तो नहीं- इस सवाल से आतंकित आप भागे भागे अस्पताल पहुँचे। बस, अब आपके हाथ में कुछ नहीं रहा। डॉक्टर का ईमान, वह आपके दिल के साथ जो चाहे कर सकता है। छाती के दर्द के साथ अस्पताल पहुँचे मरीजों को आज कल कैप्टिव पेशेंट (चंगुल में फँसे मरीज) की संज्ञा दी जा रही है।

कई अध्ययनों से यह बात सामने आ चुकी है कि छाती में दर्द के कुल मामलों में से करीब 33 प्रतिशत ही हार्ट से जुड़े होते हैं। बाकी दर्द, पेट या स्पाइन से जुड़े होते हैं लेकिन देश की राजधानी दिल्ली के निजी अस्पतालों में छाती में दर्द के मामलों के रिकॉर्ड देखें तो उनमें लगभग शत-प्रतिशत को हार्ट से जुड़ा दर्द ही बताया गया मिलेगा।

## ध्यान देने योग्य बातें –

छाती में दर्द के बाद भयभीत होकर अस्पताल पहुँचे मरीजों पर बेवजह एंजियोप्लास्टी कर कुछ अस्पताल मालामाल हो रहे हैं। उन्होंने छाती के दर्द के मरीजों को फाँसने के लिए कई जगह अपने छोटे-छोटे चेस्ट पेन क्लिनिक खोल रखे हैं।आप वहाँ गए नहीं कि वहाँ बैठे अस्पताल के एजेंट आपको अस्पताल की इमरजेंसी में पहुँचा देंगे।

कई ऐसे टेस्ट हैं जिसके जरिए यह पता लगाया जा सकता है कि छाती का दर्द 'लो रिस्क' है या जानलेवा साबित हो सकता है लेकिन वे ऐसा नहीं करते। दवा से दिल के मरीजों का इलाज करने वाले कई विशेषज्ञ निजी बातचीत में यह स्वीकार करते हैं कि छाती के दर्द के भय का फायदा उठा कर कुछ डॉक्टर व अस्पताल दिल का मामला नहीं होने के बावजूद एंजियोप्लास्टी जैसी तकनीक का इस्तेमाल कर डालते हैं लेकिन वे खुल कर ऐसा कहने की जुर्रत नहीं करते क्योंकि एंजियोप्लास्टी आज कल किसी भी अस्पताल की कमाई का बहुत बड़ा जरिया बन गया है।

विशेषज्ञों के अनुसार कई संबंधित टेस्टों में से एक टेस्ट ऐसा है, जिससे यह साफ हो जाता है कि छाती का दर्द हार्ट अटैक है या नहीं। 'ट्रोपोनिन आई/ Troponin-I या Trop-I' नामक एक ब्लड टेस्ट करने पर यह पता चल जाता है। अगर यह टेस्ट निगेटिव आता है तो यह निश्चित किया जा सकता है कि छाती के इस दर्द का हार्ट अटैक से कोई लेना-देना नहीं। लेकिन यह टेस्ट करने के बजाय डॉक्टर एंजियोग्राम कर देते हैं। दिल की नली में ब्लॉक की जाँच इसी विधि से की जाती है। इस जाँच के बाद ही एंजियोप्लास्टी होती है।

अब अधेड़ उम्र के किसी भी व्यक्ति की जाँच इस विधि से करें तो दिल की नली में कुछ न कुछ रुकावट तो मिल ही जाएगी। इसी को आधार बना कर जरूरत नहीं होने पर भी एंजियोप्लास्टी कर दी जाती है।

एक डॉक्टर (मैं खुद भी यही कहता हूँ) ने कहा कि यही वजह है कि अनेक लोगों में एंजियोप्लास्टी के बाद भी छाती का दर्द नहीं रुकता है क्योंकि वह दर्द किसी और वजह से हो रहा होता है। दुनिया में रोज लाखों लोग छाती के दर्द से पीड़ित होते हैं लेकिन हर दर्द हार्ट अटैक का नहीं होता है। हाँ, सबके लिए यह एक डरावना दर्द जरूर है।

एनजाइना दर्द और हार्ट अटैक से उत्पन्न दर्द में भी फर्क है और एनजाइना को दवाओं द्वारा काबू में रख कर राहत पहुँचा कर इलाज जारी रखा जाता है और एंजियोप्लास्टी/स्टेंटिंग इसमें आवश्यक नहीं है।

आशा करता हूँ कि यह सामान्य सी जानकारी आप सब मित्रों हेतु लाभप्रद रहे ..!

स्वस्थ रहें, प्रसन्नचित्त रहें, मंगलकामनाएँ ।

********

**हिन्दी अब सारे राष्ट्र की भाषा बन गई है ।**
**हमें उस पर गर्व होना चाहिए ।**

**- वी.बी.पटेल**

# बदलाव की सबसे ज्यादा शक्ति प्रेम में ही होती है

साभार : नवभारत टाइम्स

एक अध्यापिका अपना अस्सीवां जन्मदिन मना रही थीं। उन्होंने अनेक वर्ष एक विद्यालय में अध्यापन कार्य किया था। उनसे मिलने से पहले, उस विद्यालय के अनेक छात्र गैर-सामाजिक गतिविधियों में लगे हुए थे। पर जब उस अध्यापिका ने वहां पढ़ाना शुरू किया, तो लोगों ने महसूस किया कि उन शिष्यों के व्यवहार में बदलाव आने लगा। धीरे-धीरे उन सब में गहन परिवर्तन हुआ। उनमें से कई शिष्य बड़े होकर अच्छे नागरिक बने। कई बाद में चिकित्सक, वकील, अध्यापक, अच्छे तकनीशियन और व्यापारी बने। लोगों ने देखा कि उस अध्यापिका ने अनेक बिगड़े हुए बच्चों की जिंदगी संवार दी।

स्वाभाविक था कि उनके अस्सीवें जन्मदिन पर उन्हें आदर- सम्मान देने के लिए और जो कुछ उन्होंने किया था, उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए उनके भूतपूर्व शिष्य बड़ी संख्या में उनके पास पहुंचे। उनमें से अनेक छात्र अपने परिवार के साथ आए। देखते-देखते वहां गणमान्य व्यक्तियों की काफी बड़ी भीड़ एकत्र हो गई। वह एक भव्य आयोजन में बदल गया। अखबार वालों ने इस विशाल जन्मदिन पार्टी के बारे में सुना, तो वे भी आ पहुंचे। कुछ पत्रकारों ने उस अध्यापिका का साक्षात्कार लिया। उन्होंने पूछा, 'एक अध्यापक के रूप में आपके सफल होने का रहस्य क्या है?'

अध्यापिका ने उत्तर दिया, 'जब मैं अपने चारों ओर आज के युवा अध्यापकों को देखती हूं, जिन्होंने बच्चों को पढ़ाने की ट्रेनिंग ली है और बीएड किया है, तो पाती हूं कि वे प्रशिक्षित हैं और पढ़ाने की बारीकियों पर ध्यान दे सकते हैं, वे बच्चों को सचमुच कुछ सिखा सकते हैं। पर पीछे देखती हूं तो महसूस करती हूं कि जब मैंने पढ़ाना शुरू किया, तब मेरे पास देने के लिए सिर्फ प्यार था।' उस अध्यापिका के इस सादे से वाक्य में, हमें सभी युगों के सत्गुरुओं की सफलता का रहस्य मिलता है। इस कहानी की अध्यापिका के अंदर, जीवन को बदल देने की शक्ति थी। उन्होंने ऐसे छात्रों को पढ़ाया जिनमें सदाचार की कमी थी और उनको सदाचारी व्यक्तियों में बदल दिया। यही काम एक सतगुरू करते हैं। वे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से भरे दुखी मनुष्यों को अपनाते हैं और उनको ऐसे इन्सानों में बदल देते हैं, जो अहिंसा, पवित्रता, नम्रता, सचाई और प्रेम से भरे हों। वे ऐसा कैसे करते हैं? वे यह सब दिव्य-प्रेम की शक्तियों से करते हैं।

अगर हमें कठोरता पूर्वक आदेश दे कर यह कहा जाए कि क्या करना है, तो शायद हम में से कुछ ही व्यक्ति उसका पालन करेंगे। पर अगर हम किसी से प्रेम करते हैं और जानते हैं कि वह भी हमसे प्रेम करता है, तो हम उसके आदेश सुनते हैं, उसका आदर करते हैं। माता-पिता के प्रेम के द्वारा एक बच्चा बोलना और चलना सीखता है। एक अध्यापक के प्रेम के द्वारा बच्चा पढ़ना-लिखना सीखता है। एक प्रशिक्षक के प्रेम के द्वारा हम कोई हुनर सीखते हैं। एक आध्यात्मिक गुरु के दिव्य-प्रेम से हम स्वयं भी आध्यात्मिक बन जाते हैं। हम महान संतों के जीवन में देख चुके हैं कि वे कितने दयावान थे। इसीलिए जो भी उनसे मिले, उनके जीवन को उन्होंने सकारात्मक रूप से बदल दिया। प्रेम में सर्वाधिक रूपांतरकारी शक्ति होती है।

********

## रिश्ते अनमोल होते है

गीता शर्मा
सहायक प्रबंधक (हिन्दी)

रिश्ते अनमोल होते हैं
हमारे अस्तित्व की पहचान होते हैं
हम रिश्तो में नहीं जीते
रिश्ते हम में जीते हैं
रिश्ते प्यार और सम्मान से बंधे होते हैं
कभी ख़ुशी या ग़म में, पुरानी यादों में
रिश्ते चलचित्र से छाए होते हैं

रिश्तों को हम नम्रता से पकड़ते हैं
रिश्ते हमें प्यार सम्मान से जकड़ते हैं
रिश्ते हम में आपसी विश्वास बढ़ाते हैं
रिश्तों के प्यार की खुशबू हमें सदा महकाती है
रिश्ते अनमोल होते है ।

****

# अकबर-बीरबल और ऊँट की गर्दन

अकबर बीरबल की हाज़िर जवाबी के बडे कायल थे। एक दिन दरबार में खुश होकर उन्होंने बीरबल को कुछ पुरस्कार देने की घोषणा की। लेकिन बहुत दिन गुजरने के बाद भी बीरबल को धनराशि (पुरस्कार) प्राप्त नहीं हुई। बीरबल बड़ी ही उलझन में थे कि महारज को याद दिलायें तो कैसे?

एक दिन महाराज अकबर यमुना नदी के किनारे शाम की सैर पर निकले, बीरबल उनके साथ था। अकबर ने वहाँ एक ऊँट को घुमते देखा। अकबर ने बीरबल से पूछा, "बीरबल बताओ, ऊँट की गर्दन मुड़ी क्यों होती है"?

बीरबल ने सोचा महाराज को उनका वादा याद दिलाने का यह सही समय है। उन्होंने जवाब दिया – महाराज यह ऊँट किसी से वादा करके भूल गया है, जिसके कारण ऊँट की गर्दन मुड़ गयी है। महाराज, कहते हैं कि जो भी अपना वादा भूल जाता है तो भगवान उनकी गर्दन ऊँट की तरह मोड़ देता है। यह एक तरह की सजा है।

तभी अकबर को ध्यान आता है कि वो भी तो बीरबल से किया अपना एक वादा भूल गये हैं। उन्होंने बीरबल से जल्दी से महल में चलने के लिये कहा और महल में पहुँचते ही सबसे पहले बीरबल को पुरस्कार की धनराशि उसे सौंप दी और बोले मेरी गर्दन तो ऊँट की तरह नहीं मुडेगी बीरबल और यह कहकर अकबर अपनी हँसी नहीं रोक पाए।

और इस तरह बीरबल ने अपनी चतुराई से बिना माँगे अपना पुरस्कार राजा से प्राप्त किया।

********

**कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है।**

**- थॉमस एडिसन**

# आपके पत्र

निगम हिन्दी पत्राचार का स्वागत करता है।

उप क्षेत्रीय कार्यालय
SUB REGIONAL OFFICE
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
EMPLOYEES' STATE INSURANCE CORPORATION
प्लाट सं. 47 सैक्टर–34, गुड़गांव–122001
PLOT NO. 47, SECTOR-34, GURGAON-122001
फोन सं. 0124–2370269, 2370333 ; फैक्स 0124–2370270
ई–मेल dir-gurgaon@esic.in

संख्याः 69ए/49/12/8/2009–रा.भा. 1444 दिनांकः 03/11/2016 04

सेवा में,
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक,
वाप्कोस लिमिटेड, 76–सी,
इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
सैक्टर–18, गुड़गांव–122015

विषयः गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण', अप्रैल–जून, 2016 अंक 81 के लिए धन्यवाद पत्र।

महोदय,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'वाप्कोस दर्पण' का अप्रैल–जून, 2016 अंक 81 प्राप्त हुआ। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, रचनाएं एवं विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्र पत्रिका को रोचक, ज्ञानवर्धक, सूचनापरक और उपयोगी बनाते हैं। अंक में राजभाषा संबंधी विवरण एवं चित्रों की प्रस्तुति बहुत ही सराहनीय है। पत्रिका में झलकती विविधता अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक एवं बौद्धिक क्षमता की भी परिचायक हैं। आशा है भविष्य में भी इस प्रकार के और भी अंक प्राप्त होते रहेंगे।

संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय

(डी.के.मिश्र)
निदेशक(प्रभारी)

# राजभाषा नीति से संबंधित निर्देश

## Important Direction regarding Official Language Policy

### राजभाषा अधिनियम / The Official Language Act, 1963

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन तथा प्रेस विज्ञप्तियों, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले राजकीय कागज-पत्र, संविदा करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञा-पत्र, निविदा सूचनाएं तथा निविदा प्रारूप द्विभाषिक रूप में अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जारी किए जाएंगे।

**Under Section 3(3) of The Official Language Act, 1963 Resolution, General Order, Rules, Notification, Administrative and other Reports and Press Communiques, Administrative and Other Reports and Official papers to be laid before a House and House of Parliament, Contracts Agreements, Licence, Permits, Tender Notices and Forms of Tender shall be issued bilingually both in Hindi and English.**

### राजभाषा नियम / The Official Language Rules, 1976

हिन्दी में प्राप्त पत्र आदि, चाहे वे किसी भी क्षेत्र से प्राप्त हों, उसका उत्तर हिन्दी में दिया जाए।

**Replies to communications received in Hindi whether they are received from any regions, replies should be given in Hindi.**

राजभाषा नियम / The Official Language Rule - 5

### राजभाषा कार्यान्वयन के प्रयोजन से देश को तीन क्षेत्रों में रखा गया है जिसका विवरण इस प्रकार है :-

"क" क्षेत्र : बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड राज्य तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अण्डमान तथा निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।

**Region "A" : State of Bihar, Chhattisgarh, Haryana, Himachal Pradesh, Jharkhand, Madhya Pradesh, Rajasthan, Uttar Pradesh, Uttrakhand, National Capital Territary of Delhi and Andaman & Nicobar Island Union Territory.**

"ख" क्षेत्र : गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।

**Region "B" : State of Gujarat, Maharashtra and Punjab and the Union Territories of Chandigarh, Daman & Diu and Dadra & Nagar Haveli.**

"ग" क्षेत्र : "क" और "ख" क्षेत्रों में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र।

**Region "C" : All other States not included in the "A" and "B" Region or Union Territories.**

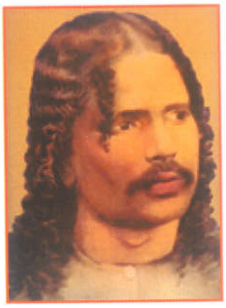

# भारतेन्दु हरिशचन्द्र

(9 सितम्बर 1850 – 6 जनवरी, 1885)

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।।
अँग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन ।
पै निज भाषा– ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन ।।

निज भाषा उन्नति बिना, कबहुँ न है है सोय ।
लाख उपाय अनेक यों, भले करे किन कोय ।।
इक भाषा इक जीव इक, मति सब घर के लोग।
तबै बनत है सबन सों, मिटत मूढता सोग।

और एक अति लाथ यह, या में प्रगट लखात।
निज भाषा में कीजिए, जो विद्या की बात ।।
तेहि सुनि पावै लाभ सब, बात सुनै जो कोय।
यह गुन भाषा और महं, कबहुँ नाहीं होय ।।

भारत में सब भिन्न अति, ताहीं सों उत्पात।
विविध देस मतहू विविध, भाषा लखात ।।
सब मिल तासों छाँड़ि कै, दूजे और उपाय।
उन्नति भाषा की करहु, अहो भ्रातगन आय।

★ ★ ★ ★ ★ ★

वाप्कोस लिमिटेड
WAPCOS LIMITED
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation

पंजीकृत कार्यालय : 'कैलाश', 5वां तल, 26, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110001
दूरभाष : 011–23313131–3, फैक्स : 011–23313134
निगमित कार्यालय : 76–सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सैक्टर–18, गुड़गांव–122 015, (हरियाणा)
दूरभाष : 0124–2340548 फैक्स : 0124–2397392,
ई–मेल : hindi@wapcos.co.in वेबसाईट : www.wapcos.co.in